RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 1 अंक 7 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

रंगों का पर्व
होली की हार्दिक
शुभकामनाएं

हिन्दी मासिक पत्रिका

मार्च 2018

पेज संख्या : 36 राजसमंद

राजसमंद भाजपा के बिखरते रंग

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

e-mitra

ई-मित्र

बिजली, पानी, टेलीफोन के बिल,
जाति प्रमाण पत्र, मुल निवास प्रमाण पत्र,
राशन कार्ड इत्यादी कार्य किए जाते हैं।

9782106975

Vikrant Paliwal

vikrantpaliwal@gmail.com

RS-CIT

Digital India
Power To Empower

● ITZ Cash ● IRCTC (Rail//Air Ticket) ● Pan Card/Passport

DIVYAM ONLINE SERVICES

पालीवाल मार्केट, कांकरोली, जिला राजसमंद (राज.)

GAYATRI PUBLIC SENIOR SECONDARY SCHOOL, DHOINDA

(English & Hindi Medium)

ADMISSION OPEN UKG to XII

SCIENCE	COMMERCE	ARTS
Physics Chemistry Biology Mathematics	Accounts Business Studies Economics Mathematics	English Lit. Hindi Lit. Sanskrit Lit. Geography Economics Drawing

Salient Features

- One of The Best Well Disciplined School in District
- Educational Environment
- Sports & Cultural Activities
- Bank & Industry Visit for Commerce Student
- Science Visit to Science City Ahmedabad
- Educational Tour (Jaisalmer)
- E-Learning
- Well Furnished & Ventilated Class Room, Labs & Library
- Excellent Result in Board Classes
- Proficient Faculty & Staff
- Scholarship for Meritorious Students
- Digital Smart Class Concept
- Pure Aqua Water
- 24 Hours Electricity Backup
- Spiritual Prayer
- Conveyance Facility by Luxurious Buses

Hurry Up ! Limited Seats....

Contact :

Principal 02952-221818

Hitesh Paliwal 9784055000

Girish Paliwal 02952-220818

Harivallabh Paliwal 9314421818

ADMISSION FORMS ARE AVAILABLE IN OFFICE BETWEEN 8.30AM TO 1.30 PM

Tel. : 02952-220818, 221818 | E-mail : gpsdhoinda@gmail.com

25% RTE Admission

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक बुकिंग
सिर्फ 150 रुपए में

प्रवेश प्रारम्भ

1 जून 2018 से नवीन सत्र हेतु पुनः अतिरिक्त एवं निःशुल्क शिक्षण

विज्ञान वर्ग	वाणिज्य वर्ग		कला वर्ग	कक्षा - 10
भौतिक विज्ञान रसायन विज्ञान गणित, जीव विज्ञान	लेखाशास्त्र व्यवसाय अध्ययन अर्थशास्त्र, कम्प्यूटर विज्ञान	पूर्ण अंग्रेजी माध्यम संगीता किड्ज प्लानेट	भूगोल, राजनीति विज्ञान इतिहास, संस्कृत, हिन्दी साहित्य कम्प्यूटर विज्ञान	गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, सामाजिक, संस्कृत, हिन्दी

प्रवेश प्रारम्भ

विशेष :- कक्षा 11वीं, 12वीं के लिए विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग में सभी विषयों के साथ कम्प्यूटर साइंस एवं वैकल्पिक गणित भी उपलब्ध।

प्ले ग्रुप से बारहवीं तक (हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम)

संगीता सी. सैकेण्डरी स्कूल, कांकरोली

SANGEETA SR. SEC. GRACIOUS VISION, KANKROLI

स्वास्तिक सिनेमा के पास, स्टेशन रोड़, कांकरोली

9414174681, 9166579594

संगीता सीनियर सैकेण्डरी स्कूल केलवा

पवन मोटर्स के पीछे, बस स्टैंड, केलवा जिला-राजसमंद

9414174681, 9166579594, 02952-278170

सम्पादकीय

जनता दे देगी जवाब

राजस्थान में तीन सीटों के उपचुनाव में करारी हार ने भाजपा को आइना दिखा दिया। राजस्थान में कांग्रेस की जीत में कांग्रेस की कोई उपलब्धि नहीं, वरन बीजेपी के अन्त:कलह का परिणाम है। सम्पूर्ण राज्य में सत्तामद में जो कार्य हुए हैं यह इसी का परिणाम हैं। क्योंकि अब वो जनता नहीं रही, जो सिर्फ सुन्दर चेहरों को धर्म के नाम पर वोट दे दें। अब तो विकास कार्य करने वाले को पसन्द करती हैं और अक्रमण्य, अभिमानी को पटकनी देने में भी समय नहीं लगाती हैं। राजस्थान में तीन सीटों में कांग्रेस की जीत के पटाखे बीजेपी कार्यकर्ताओं ने ज्यादा फोड़े, जिससे अंदाजा लगाया जा सकता हैं कि बीजेपी के कार्यकर्ता कितने नाराज हैं। राजसमंद में भी कार्यकर्ताओं की नाराजगी इन दिनों सोशल मीडिया के मैसेज में खुलकर सामने आई। उच्च शिक्षा मंत्री व सांसद की गुटबाजी भी सामने है। दोनों के करीबी कार्यकर्ता ही खुलकर विरोध करते नजर आ रहे हैं। इन सबके बीच जनता मौन दृश्यावलोकन कर रही हैं कि राजनीति में कार्यकर्ता अपने मतलब के कार्य न होने पर किस तरह वरिष्ठ के विरोध में उतर जाते हैं और पदासीन वरिष्ठ किस तरह सत्तामद में जनता के साथ-साथ कार्यकर्ता को भी किनारे छोड़ देते हैं। एक तरफ राजनीति में जिस झील की पूजा की जाती हैं और सिंचाई के नाम पर उसी झील का पानी व्यर्थ बर्बाद किया जाता हैं तथा उसी झील को भरने के लिए देवास से पानी लाने का फिर आश्वासन दिया जाता हैं। राजनेता ध्यान दे कि जनता मौन हैं, पर समय के इंतजार में हैं। समय आने पर आपसे जवाब भी मांगेगी और आपको भी जवाब दे देगी।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
उप सम्पादक व निदेशक	विजय शर्मा
संवाददाता	हितेन्द्रसिंह चौहान
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
विज्ञापन प्रबन्धक	जितेन्द्र शर्मा
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल, (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग कार्य के लिए
फुलटाइम/पार्ट टाइम ऊर्जावान युवकों की आवश्यकता
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका सम्पर्क : 94142-39648

गुस्ताखी माफ

भाजपा में अन्तर्कलह

जयवर्द्धन पड़ताल ## सत्तामद में नेता, स्वार्थ सिद्ध न होने से कार्यकर्ता हो रहे नाराज

जिस तरह शादी से कुछ समय पहले भाई बंध, काका-बाबा हर किसी बात पर नाराज हो जाते हैं। ठीक उसी तरह इस वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले सत्तारूढ़ भाजपा के कार्यकर्ताओं में विरोध के स्वर मुखर हुए। देवगढ़, नाथद्वारा नगरपालिका चुनाव से लेकर अब इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले इसी तरह की नाराजगी भाजपा के कार्यकर्ताओं में देखने को मिली। क्योंकि अक्सर धरना प्रदर्शन में आगे रहने वाले, पोस्टर चिपकाने वाले, विचार का प्रसार करने वाले कार्यकर्ता को चुनाव आते ही पीछे धकेल दिया गया। साथ ही पार्टी के विचार, समर्पण, कनिष्ठ व वरिष्ठ के कायदों का गला घोंट दिया गया। गत विधानसभा चुनाव में भीम में वरिष्ठ को तवज्जों न देना कांग्रेस को महंगा पड़ा। ठीक वैसी ही स्थिति देवगढ़ नगरपालिका चुनाव में कर्मठ कार्यकर्ता को दरकिनार करने का खमियाजा भाजपा को भुगतना पड़ा। ऐसे ही हालात कॉलेज के छात्रसंघ चुनाव में भी देखने को मिले और अब दिसम्बर 2018 तक होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले दो धड़ों में बंटी सत्तारूढ़ भाजपा के कार्यकर्ताओं की नाराजगी खुलकर सामने आने लग गई है। राजसमंद में भाजपा के ही कार्यकर्ता इन दिनों सोशल मीडिया पर अपनी भड़ास निकालने में लगे हैं। ऐसे हालात बने रहे तो भाजपा के गढ़ को जनता ध्वस्त कर नेताजी को अर्श पर फिर फर्श पर ला सकती है।

प्रधान के आरोप से मची थी खलबली

पंचायत समिति राजसमंद की प्रधान रीना कुमावत ने 26 नवम्बर 2017 को अपने ही पार्टी के तत्कालीन मंडल अध्यक्ष महेश आचार्य पर अनैतिक दबाव का आरोप लगाया था। विकास अधिकारी अमित शर्मा के तबादले को लेकर उपजे विवाद में प्रधान ने आरोप लगाया कि महेश आचार्य द्वारा अनावश्यक दबाव बनाते हुए उसकी शक्तियां हथियाने, उनके निर्णयों को बदलने, विभागीय कामकाज में अनैतिक दखल का आरोप लगाया। ग्रामसेवकों के तबादले के आदेश को भी बदल देने को आरोप लगाया था। हालांकि उसके बाद जिला अध्यक्ष भंवरलाल शर्मा की अध्यक्षता में मंडल अध्यक्ष आचार्य व प्रधान रीना की सामूहिक बैठक हुई। उसके बाद प्रधान ने अपने ही द्वारा लगाए गए सभी आरोपों से मुकर गई थी।

भाजपा राजसमंद में भारी सांसद-मंत्री की गुटबाजी

राजसमंद में भाजपा में गुटबाजी लंबे समय से है। उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी व सांसद हरिओमसिंह राठौड़ के साथ ही उनके कार्यकर्ता भी एक दूसरे के आमने सामने हैं। सांसद व मंत्री में प्रत्यक्ष तौर पर गुटबाजी कई बार सामने आई। इस कारण पार्टी की मर्यादाएं भी तार तार हो रही है और इसी वजह से शहर व गांव के आम कार्यकर्ता भी इसके शिकार बन रहे हैं।

तब नहीं आए थे सांसद

राजसमंद में गत वर्ष समाज कल्याण विभाग की ओर से जन कल्याण शिविर आयोजित किया गया था, जिसमें केन्द्रीय समाज कल्याण मंत्री के अलावा उच्च शिक्षा मंत्री व तमाम प्रशासनिक अफसर शामिल हुए, मगर सांसद हरिओमसिंह राठौड़ नहीं आए। इसको लेकर सांसद समर्थित कुछ कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम स्थल पर आकर समाज कल्याण मंत्री अरुण चतुर्वेदी से भी शिकायत की। इस पर मंत्री चतुर्वेदी ने भी असंतोष व्यक्त किया था।

भाजपा में प्रशासनिक दखल के आरोप, जयपुर तक खलबली

भाजपा संसदीय क्षेत्र मीडिया संयोजक मधुप्रकाश लड्ढा ने फेसबुक पर पोस्ट की, जिससे राजनीतिक हलके में खलबली मच गई। पोस्ट थी कि भाजपा जिलाध्यक्ष बैरवा, महामंत्री रॉय क्या अपने पद से इस्तीफा देंगे ?... दरअसरल भाजपा जिलाध्यक्ष जिसे बताया है, वे अतिरिक्त कलक्टर है, जबकि नगरपरिषद आयुक्त ब्रजमोहन बैरवा को महामंत्री के रूप में कमेंट किया। इस पोस्ट पर राजसमंद शहर ही नहीं, बल्कि जिलेभर के साथ प्रदेश स्तर तक के लोगों ने कमेंट करते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त की। साथ ही भाजपा में प्रशासनिक अफसरों की दखल की निंदा की। इस कमेंट को लेकर मुधप्रकाश लड्ढा ने बयान दिया कि भाजपा में इन दिनों कुछ ऐसा ही चल रहा है, जिसमें कार्यकर्ता की कोई सुनवाई नहीं होती। क्योंकि पार्टी के जिलाध्यक्ष भंवर लाल शर्मा तो सिर्फ कठपुतली मात्र है। दूसरी ओर पार्टी के जिलाध्यक्ष शर्मा ने लड्ढा के खिलाफ जांच कर कार्रवाई करने की बात कही।

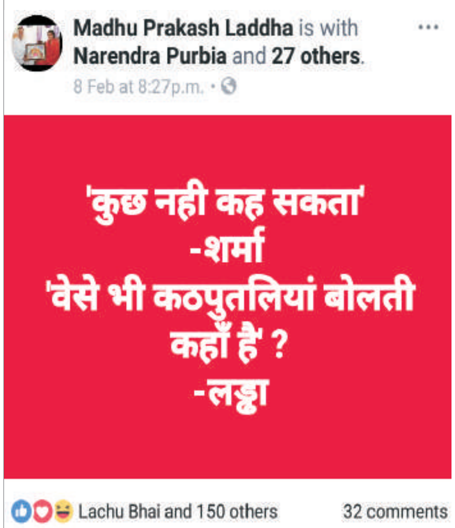

बागी अजय ने दिखाया आईना

राजसमंद की तरह भीम विधानसभा क्षेत्र में भी कार्यकर्ताओं के साथ कुछ ऐसा ही हश्र हुआ है। देवगढ़ नगरपालिका चुनाव के दौरान पार्टी से टिकट नहीं मिलने पर बागी हुए अजय सोनी ने देवगढ़ में निर्दलीय का झंडा गाड़ते हुए भाजपा को करारी हार दी। फिर छात्रसंघ चुनाव के दौरान भी देवगढ़ कॉलेज में भी अजय सोनी ने अपनी युवा टोली के सहारे निर्दलीयों का छात्रसंघ खड़ा कर दिया और एबीवीपी को हार का रास्ता दिखा दिया।

भाजपा नेता व पूर्व पालिकाध्यक्ष अशोक रांका की फेसबुक पोस्ट से

आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं,
शैतानी शैतान की।
नेताओं से बहुत दु:खी है,
जनता हिन्दुस्तान की।।

बड़े- बड़े नेता शामिल हैं,
घोटालों की थाली में।
सूटकेश भर के चलते हैं,
अपने यहां दलाली में।।

देश-धर्म की नहीं है चिंता,
चिन्ता निज सन्तान की।
नेताओं से बहुत दु:खी है,
जनता हिन्दुस्तान की।।

चोर- लुटेरे भी अब देखो
विधायक हैं।
सुरा- सुन्दरी के प्रेमी ये,
सचमुच के खलनायक हैं।।

भिखमंगों में गिनती कर दी,
भारत देश महान की।
नेताओं से बहुत दु:खी है,
जनता हिन्दुस्तान की।।

जनता के आवंटित धन को,
आधा मंत्री खाते हैं।
बाकी में अफसर, ठेकेदार,
मिलकर मौज उड़ाते हैं।।

लूट खसोट मचा रखी है,
सरकारी अनुदान की।
नेताओं से बहुत दु:खी है,
जनता हिन्दुस्तान की।।

थर्ड क्लास अफसर बन जाता,
फर्स्ट क्लास चपरासी है।
होशियार बच्चों के मन में,
छायी आज उदासी है।।

गंवार सारे मंत्री बन गए,
मेधावी आज खलासी है।
आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं,
शैतानी शैतान की।।

नेताओं से बहुत दु:खी है,
जनता हिन्दुस्तान की।

जिला महामंत्री ने बयां किए हालात

भाजपा जिला महामंत्री महेश आचार्य ने फेसबुक पर कड़ी पत्ता व धनिये को आधार मान कर भाजपा की आंतरिक स्थिति बयां करते हुए आम कार्यकर्ता का दर्द बताया। इस पर सोशल मीडिया पर कार्यकर्ताओं के साथ कई लोगों ने पक्ष व विपक्ष में कमेंट किए, जिससे पार्टी का अनुशासन, मर्यादा व चरित्र फिर खुलकर सामने आ गया।

कनिष्ठ लगा रहे वरिष्ठ पर आरोप

भाजपा में गुटबाजी और अन्तर्कलह से त्रस्त होकर पार्टी के कनिष्ठ कार्यकर्ता व पदाधिकारी ही वरिष्ठ पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों पर अनर्गल आरोप लगा रहे हैं। इस कारण भी पार्टी की आंतरिक उठापटक को लेकर आरोप प्रत्यारोप के स्वर मुखर होने लगे हैं।

Bapu Chotu
20 Feb at 9:56am

*निष्ठावान **भारतीय जनता** पार्टी का कार्यकर्ता मतलब क्याहै??
Ans: *कड़ी पत्ता*
कोई भी सब्जी बनाते समय सबसे पहले उसे ही डाला जाता है
और..
उसी सब्जी को खाते समय सबसे पहले उसे ही खींचकर बाहर फेंका जाता है !!
😀. और भारतीय जनता पार्टी का चापलूस कार्यकर्ता मतलब क्या ??
Ans: *हरा धनिआ*
कोई भी सब्जी बनाते समय सबसे बाद मे प्रस्तुत करने के समय डाला जाता है
और..
फिर सब्जी के सारे स्वाद का श्रेय उसे ही दिया जाता है !!
😀😀😀😀

Like Comment Share

Giriraj Kabra and 135 others

Ashok Ranka
अहंकार के अश्व पर आरूढ़ होकर एक राजनेता जनप्रतिनिधी होते हुए भी अपने मन का प्रतिनिधित्व कर रही है, मैं शब्दों का सारथी बन कर उन्हे उस समय का स्मरण कराता हु कि ये वही अश्व है जिस पर आरूढ़ होकर राजा विक्रमादित्य भी साढ़े सात वर्षों तक सत्ता एवं राज्य सुख से वंचित रहे थे
स्मरण रहे की ये न्यायमूर्ति जनता एवं कार्यकर्ता उन्हे भी 15 वर्षों तक इस अद्भुत सुख से वंचित रख सकती है
1w Like Reply 1

Nandkishor Yadav
Very nice
1w Like Reply

Giriraj Kabra
#अब हरा धनिया छटने वाला है
।
ब्रेकिंग न्यूज़!!!

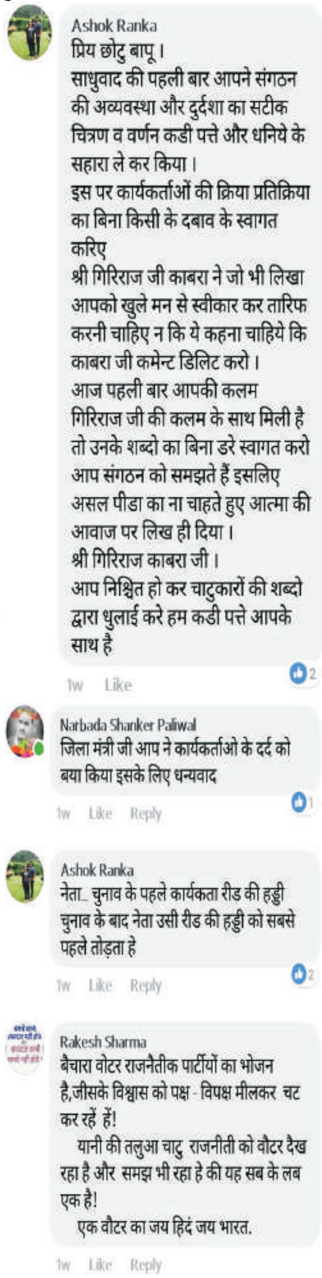

Ashok Ranka
प्रिय छोटु बापू।
साधुवाद की पहली बार आपने संगठन की अव्यवस्था और दुर्दशा का सटीक चित्रण व वर्णन कडी पत्ते और धनिये के सहारा ले कर किया।
इस पर कार्यकर्ताओं की क्रिया प्रतिक्रिया का बिना किसी के दबाव के स्वागत करिए
श्री गिरिराज जी काबरा ने जो भी लिखा आपको खुले मन से स्वीकार कर तारिफ करनी चाहिए न कि ये कहना चाहिये कि काबरा जी कमेन्ट डिलिट करो।
आज पहली बार आपकी कलम गिरिराज जी की कलम के साथ मिली है तो उनके शब्दो का बिना डरे स्वागत करो आप संगठन को समझते हैं इसलिए असल पीडा का ना चाहते हुए आत्मा की आवाज पर लिख ही दिया।
श्री गिरिराज काबरा जी।
आप निश्चित हो कर चाटुकारों की शब्दो द्वारा धुलाई करे हम कडी पत्ते आपके साथ है
1w Like 2

Narbada Shanker Paliwal
जिला मंत्री जी आप ने कार्यकर्ताओ के दर्द को बया किया इसके लिए धन्यवाद
1w Like Reply 1

Ashok Ranka
नेता_ चुनाव के पहले कार्यकता रीड की हड्डी चुनाव के बाद नेता उसी रीड की हड्डी को सबसे पहले तोड़ता हे
1w Like Reply 2

Rakesh Sharma
बैचारा वोटर राजनैतीक पार्टीयों का भोजन है,जीसके विश्वास को पक्ष - विपक्ष मीलकर चट कर रहें हें!
यानी की तलुआ चाटु राजनीती को वौटर देख रहा है और समझ भी रहा हे की यह सब के लब एक है!
एक वौटर का जय हिंदं जय भारत.
1w Like Reply

तीखी मिर्ची

खम्भे से चिपके नेता

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

आजकल जहाँ भी देखो प्रत्येक खम्भें पर किसी न किसी नेता की फोटो टंगी मिलेगी। साथ में होगी किसी त्योहार या किसी जन्म दिन की बधाई। गणगौर, होली दिवाली हो, गणेश पूजा या नवरात्रि, कोई ना कोई बहाना मिल ही जाता है। खम्भे पर अपनी शक्ल टांगने का। अब शक्ल भी फोटोग्राफर ऐसी हीरो जैसी बनाते हैं तो कि एकाएक आश्चर्य तो होता है कि ओम पुरी जैसे दिखने वाले नेताजी जॉन इब्राहिम जैसे जवान ओर खूबसुरत कैसे दिखने लगे। वैसे तो खम्भे से एक अन्य जीव को भी लगाव रहता हैं मगर नेताओं के मुकाबले नहीं।

फोटो में हाथ जोड़कर मुस्कुराते नेताजी उस लाचार मुद्रा में दिखते हैं। वैसी मुद्रा में तो पांच साल में सिर्फ एक बार वोट माँगने के दिन ही दिखाई देते हैं, वरना बाकी दिनों में तो इस मुद्रा में सिर्फजनता ही दिखाई देती है। आजकल त्यौहार के मौके पर फ्लेक्स के माध्यम से सस्ती लोकप्रियता हासिल करने का कोई भी मौका बडे नेता के अलावा वार्ड पार्षद भी छोड़ना नहीं चाहते। एक त्यौहार निपटते ही दूसरा फ्लेक्स खम्भे पर लग जाता है और पहले वाला फ्लेक्स सड़कों पर उडता नज़र आता है। आज के नेता को अपनी फोटो सड़क पर लोगों के पैरों में जाने से कोई फर्क नहीं पडता, क्योंकि भगवान के बाद नेता ही होते हैं जो मान- अपमान, इज्जत बेइजजत से ऊपर उठ जाते हैं। हमारी राजधानी के मफलरमैन को ही देख लो, कितनी बार लोगों ने हाथ साफ किया, मगर उन्होंने कभी वापस जवाब नहीं दिया। इन नेताओं को अपनी इज्जत की फिक्र हो ना हो मगर हमारे देश की स्वच्छता एवं प्लास्टिक खाकर मरती गायों की तो हमें फिक्र करनी ही होगी।

नाथद्वारा में भाजपा के दिवंगत नेता चौहान का विकल्प कौन?

राजनीतिक गलियारों में नाथद्वारा-खमनोर व राजसमंद क्षेत्र से आधा दर्जन से ज्यादा नेता लगा रहे दांव, चौतरफा चर्चा का विषय

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. भाजपा में नाथद्वारा विधानसभा क्षेत्र में दिवंगत कल्याणसिंह चौहान के विकल्प को लेकर कई नेता कतार में खड़े हो गए हैं। दावेदारी तो कई जता रहे हैं, मगर भाजपा के शीर्षस्थ नेताओं के साथ आमजन में भी यही चर्चा है कि आखिर अब चौहान के विकल्प के तौर पर कमान किसको मिलेगी और क्या वह नेता भी चौहान की तरह जनता की उम्मीदों पर खरा उतरेगा? यही यक्ष प्रश्न हर किसी के जेहन में है।

दिवंगत चौहान ने कांग्रेस में रहते हुए अपने राजनीतिक गुरू डॉ. सीपी जोशी का दामन वर्ष २००३ में छोड़ा था। इसके बाद से वे नाथद्वारा में भाजपा का नेतृत्व पूरी कुशलता के साथ संभाल रहे थे। उन्होंने 2008 में भाजपा के टिकट पर पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ा और अपने गुरु को न सिर्फ कड़ी टक्कर दी, बल्कि एक वोट से जीत भी गए। फिर 2013 में भाजपा ने उन्हें फिर मैदान में उतारा तो डॉ. जोशी के नजदीकी कांग्रेस उम्मीदवार देवकीनंदन गुर्जर को अ%छे अंतर से हराते हुए लगातार दूसरी बार विधायक निर्वाचित हुए। ऐसे में चौहान की नेतृत्व क्षमता के बाद भाजपा में आने वाले समय में नया नेतृत्व किसके हाथ लगेगा, इसको लेकर खासी चर्चाएं अभी से चल पड़ी है। इसी प्रकार उ%च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी भी यहां की राजनीति में खासा वर्चस्व रखती हैं और उनके साथ यहां का एक गुट शुरू से ही लगा रहा है, जिससे वे भी चाहेंगी कि नाथद्वारा सीट पर उनके दावेदार को ही जिम्मेदारी मिले। यहां यह उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण होगा कि इस सीट पर निर्णय में वर्तमान गृहमंत्री एवं इस विधानसभा क्षेत्र के ही मूल निवासी गुलाबचंद कटारिया का वर्चस्व प्रदेश की राजनीति के साथ-साथ केन्द्र की राजनीति में भी है। इस वर्चस्व की राजनीति में जो नेता प्रभावी होगा, उसके अनुसार ही यहां की कमान तय हो पाएगी।

ये है संभावित दावेदार

बालयोगी संतोषनाथ, शिवदान सिंह चौहान, सांसद हरिओमसिंह राठौड़ संगीता चौहान, लक्ष्मणसिंह झाला, मानसिंह बारहठ, प्रदीप काबरा

पैलां नम्बर रो सबसूं मोटो सिलालेख 24 सरगा रौ राजप्रशस्ति, 25 भाटा पै लिख्यो

राजपूताना राज्य रा सुरम्य नगर उदयपुर रे उत्तर दिसा री ओर 65 किलोमीटर री दूरी पै ठीक अरावली री पहाड़ियां सूं पूरब में महाराणा राजसिंघ (पैलां) रै हाथा बणवायो। सं. 1718-1732 में रायसागर अेक रूपालो तालाब हैं, जो कांकरोली कस्बा रै उत्तर मेरे हैं। ईरी लम्बाई 4 मील अर चौड़ाई 1 साई 3 बट्‌टा 4 मील रै लगभग हैं। वीं टेम ई रै वणावा रो खरचो डॉ. ओझा रा उदयपुर राज रा इतिहास रै मुझब 1057584 रुपए खर्च किया दरसाया गीया हैं। बांध रौ अेक भाग नौ चौकी अर दूजो भाग एरिगेशन पाल रा नाम सूं जाण्यो जावै। धोली खान रा संगमरमरी धोला भाटा अर कालीखान रा भाटा रौ इण पै काम वियो। नौ चौकी रा नौ चोहटा अर नौ-नौ पगत्यां रौ इण पै काम वियो। नौ चौकी रा नौ चोहटा अर नौ-नौ पगत्यां रै कारण नौ चौकी नाम पड्‌यो।

अठे असिया पैलां नम्बर रो सबसूं मोटो सिलालेख 24 सरगा रौ राजप्रशस्ति जो 25 काला भाटा री सिलावां पै लिख्यो जाय र चौहटा रा चबूतरा री ताकां में लगायोड़ो हैं। ईरां लेखणियां अर मां वैणी नाम री हैं। मेवाड़ महराणा उदेसिंघ सूं अणा रा वसजा रो सम्बन्ध रीयौं हैं।

राजप्रशस्ति महाकाव्य रौ मूल विसै मेवाड़ महाराणा रो इतिहास अर जीवन चरितर वरणन हैं। भासा संस्कृत अर पिलि देवनागरी हैं। पैला सर्ग रै मायं 31 श्लोकां में मंगला चरण जणां में एकलिंगनाथ, चतुर्भुजहरि, अंबाजी, गणेश अर सूजर भगवन री आराधना करी हैं। अठे घेवर माता जो साधना शिखर री पहाड़ी रै नीचे नौ चौकी प ाल रे पास वाली गुफा में थापित हैं। अम्बाजी राज प्रसाद पुराणा किला में अर महादेव अर गणपति ढाल रै नीचे हुसैनी चौक रे होड़े मन्दर में बिराजाथका हैं। नौ चौकी री नींव में कोई सतीनी व्ही। गिरवर माता नै ही घेवर माता नाम सूं राजप्रशस्ति शिलालेख रा थैला सर्ग में याद करता ग्या हैं। राणाजी आप रा नाम पै तालाब रो नाम राजसमन्द पुराणा किला रौ नाम राज प्रसाद अर पास वाली बस्ती रौ नाम राजनगर घोषित करयो। झील री नींव रौ मोरत संवत् 1718माघ कृष्णा सातम बुध्धवार ने करायो।

कांकरोली री पाल महाराणा रायसिंहजी री मारफत रो काम सं. 1726में चालू वियो। ई बरस प्रभु श्री द्वारकाधीश रो मेवाड़ से आसोट्‌या गाम में पधराया ग्या, जिरो हवालो राजप्रशस्ति रा दसमं सर्ग री ग्यारहवीं सिला में कर्‌यो गीयो चतुर्भुजधारी घनश्याम द्वारकानाथ हरि निर्मल जल रा राजसागर रै तट ऊपरे सुवर्ण शैल में पै सुशोभित द्वारका रूपी कांकरोली नगरी में शोभा पा रीयां हैं। अणी पाल री वणती दाण एक पुराण शिव मंदिर नीवं में आ रीयो हो वणी ने गुफा वणायर कायम राखर ऊपरे छवायर सड़क निकाल दीदी। ओ मन्दर गुप्तेश्वर महादेव नाम से आज भी जाण्यो जावै।

राय सागर बांधवा रै पाछे राजप्रशस्ति में चार कारण बताया गिया जणां में दरबार रायसिंघजी सं. 1718मार्गशीर्ष रा महिना में रूपनारायण रा दरसण करवा जाईरया वी वेला गैला में गोमती वण्यरौ मारग रो रूकावट वणी। कंवरपदा में रायसिंघजी पन्नवा जैसलमेर

गिया तो वणा 'री कारा बरस री ऊपर ही फेर भी सोच ऊंची हेवा सूं गोमती ने वेग सूं वेती थकी देखर उणी रै मन में विचार आयोग क इनै बांधर तालाब बणावा रौ मानस वण्यो।

तीजा का रण में इतिहासां लिख्योक तंग मिजाज व्हेवा सूं बइ यंत्र में साम राणी, पुरोहित एकक कुंवर अर चारण री वणांरा हाथ सूं हत्या व्हेहीगी तो पडंता पाप सूं छूटक रौ उपाय तालाब बांधवा रौ सुझाव दी दो। वणी दाण मेवाड़ में अकाल पडबा सूं लोग पीवा रो पाणी अर खेत में धान रा फोड़ पड़ ग्या। तो दरबार रै मन में जठे सोला गांव धोइंदा, सनवाड़, सिंवाली, भगवान्दा, मोरचणा, पसून्द, खेड़ी, छापर खेड़ी, तासोल, मंडावर, भाणे, लवाणो, वांसोल, गुड़ली अर कांकरोली रो बसी थकी ही की छापर में तालाब वणावा रो विचार जागो। अणा लोगां ने किनारा पै बसायर नौ चौकी री गंगा दो मगरा रै वज्जे बन्धो गांधीन तालाब वणावा रो मन हौयो।

मगरा ने नीचै राजनगर ने बसायर बड़ा मगरा पै अेक भारी राग प्रसाद (महल) वणाय अम्बाजी बैवाड़ी दीदा जणां रो नाम अन्नपूर्णा माता राख्यो। राजमन्दर रै निरमाण में मनख पाड़ा बलद पै तोपाणी पौचाणो तो ठीक लोगे पण दसवां सर्ग में लिख्यो मल्योफ वठे बांध (शेर) रै ऊपरे मसक भरीन पाणी पौ%यो।

नौ चौकी पै तीन छतरयां, कांकरोलीी री पाल ऊपरे तीन मंडप असोट्‌या री तरफ री पाल ऊपरे लीन मंडप अर गुड़ली, वांसोल री तरफ री पाल माथै तीन मंडप वण्या। तीसरौ मंडप आठ थाम्बारौ व्हेवा सूं कमल बुरज रा नाम सूं मंड्योड़ो हें।

आगै जठे चादर चाले वठे तीन मंडप अर तीन ओटा नाला राख्या ग्या हा। बारहवां सर्ग में वतायो गीयो हैं क रायसागर में गोमती, तालेड़ी, अर केलवा री नदियां पड़े हैं। तालाब रा सीमाड़ा में 30 वावड्‌या डूब में आई अर देरली री बामणी सं. 1691 में सती व्ही जणांरी छतरी अर पूतली वणी रै भाई बैवाड़ी।

शेष.... पेज 10 पर

हाइवे के ढाबे बने मयखाने!

जयवर्द्धन स्टींग ऑपरेशन ढाबों पर खुलेआम बिक रही शराब, जिम्मेदार मौन

लक्ष्यानुरुप शराब बेचने के लिए ठेकेदारों की ढाबा संचालकों से सांठगांठ

पुलिस व आबकारी महकमे के अफसर क्यों बने हुए जानकर भी अनजान, यही लोगों में उठ रहे हैं सवाल

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. शहर व ग्रामीण क्षेत्र के होटल-ढाबों पर खुलेआम अवैध तरीके से शराब परोसी जा रही है। लक्ष्यानुरुप शराब बेचने के दबाव में शराब ठेकेदारों ने होटल व ढाबा संचालकों से सांठगांठ कर ली। इस साले काले कारोबार से पुलिस थानों से लेकर आबकारी अधिकारी तक वाकिफ है, मगर जानबुझ कर अनजान बने हुए हैं। इसके चलते अवैध शराब का कारोबार दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। जिला प्रशासन तक शिकायत करने पर कुछ माह पहले पुलिस और आबकारी महकमे ने कुछेक होटल, ढाबा व रेस्टोरेंट की तलाशी की औपचारिकता कर कार्रवाई की फाइल बंद कर दी। इससे ढाबा संचालक की थाने व आबकारी महकमे तक मिलीभगत को लेकर सवाल उठने लगे हैं।

अधिकाधिक सरकारी शराब बेच ज्यादा से ज्यादा राजस्व अर्जित करने के सरकार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए आबकारी विभाग पर खास दबाव है। इसी वजह से आबकारी महकमे के अधिकारी भी ठेकेदार से किसी भी परिस्थिति में %यादा से %यादा शराब बिक्री का दबाव बनाते हुए अवैध तरीके से बेचने को बढ़ावा दे रहे हैं। सिरोही जिला मुख्यालय से लेकर ग्रामीण क्षेत्र में गांव-ढाणी तक आसानी से 24 घंटे शराब मिल रही है। कुछ इसी तरह राजसमंद से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग आठ पर देलवाड़ा से लेकर नाथद्वारा, राजसमंद, गोमती, दिवेर, देवगढ़ व भीम तक ढाबों पर भी खुलेआम शराब बेची जा रही है और कई ढाबे में बैठ कर पीने का प्रबंध कर रखा है। इसके चलते ढाबा संचालक खुलेआम तय दर से डेढ़ गुना %यादा कीमत वसूल रहे हैं।

तो क्यों नहीं हो रही कार्रवाई

होटल-ढाबे के साथ ही शहर-देहात के गली मोहल्लों में अवैध तरीके से चौबीस घंटे शराब बिक रही है। फिर भी आबकारी विभाग से लेकर पुलिस थानों द्वारा भी कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। इससे पुलिस कांस्टेबल से लेकर थानेदार और आबकारी निरीक्षक तक की भूमिका पर सवाल खड़े हो गए हैं।

खुलेआम बोलते : जहां चाहो शिकायत कर दो

ढाबे व अवैध ब्रांचों पर शराब की बोतल के तय दर से कई गुणा %यादा कीमत वसूलने पर कुछ लोग विरोध भी करते हैं, मगर सेल्समैन खुलेआम शराब के शौकीनों को चेतावनी देते हैं कि आप जहां चाहो, शिकायत कर दो। कुछ भी नहीं होने वाला। अगर आपको शराब चाहिए, तो यही कीमत देनी पड़ेगी।

सूखा दिवस में भी मिलती है शराब

जयवर्द्धन टीम ने हाल 26 जनवरी के अलाव पंचायतीराज के उप चुनाव के दौरान सूखा दिवस पर घोषित पंचायतों का जायजा लिया, तो कई जगह खुलेआम शराब बिकती पाई गई। इसके चलते ठेकेदारों के लिए सूखा दिवस के आदेश महज कागजी खानापूर्ति तक बनकर रह गए हैं। क्योंकि आदेश की पालना करवाने के लिए जिम्मेददार पुलिस, आबकारी महकमे के अधिकारियों के लिए भी यह कागज सिर्फ फाइल में लगाने मात्र की कार्रवाई तक ही सीमित होकर रह गया है।

हफ्ता बंधी को लेकर उठे सवाल

पुलिस में दो वर्ष पहले थानेदार से लेकर पुलिस अधीक्षक मासिक बंधी का खुलासा होने से अब अवैध शराब कारोबार में भी ठेकेदार से लेकर ढाबा संचालकों की पुलिस थानों व आबकारी से सांठगांठ होने के सवाल उठने लगे हैं। हरियाणा से गुजरात की तरफ शराब तस्करी में कुछ पुलिस जवानों की मिलीभगत होने को लेकर दो वर्ष पहले धांधली उजागर हुई। चार पुलिस जवान राजसमंद जिले के ही विभिन्न पुलिस थानों में तैनात थे, जिन पर आरोप लगे थे कि वे ड्यूटी टाइम में ब्यावर पहुंच गए और तस्करी का ट्रक पार लगाने के लिए चौथ वसूली कर रहे थे। तब तत्कालिन पुलिस अधीक्षक द्वारा कुछ पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई भी अमल में लाई गई थी।

विभागीय कार्रवाई सिर्फ खानापूर्ति

अवैध शराब की रोकथाम को लेकर आबकारी दल व पुलिस थानों द्वारा सिर्फ कागजी खानापूर्ति पूरी की जाती है। अब तक एक भी पुलिस थाने व आबकारी दल ने किसी ब्रांच को बंद नहीं किया और न ही अवैध शराब बेचने वाले होटल- ढाबा संचालकों के खिलाफ कोई कार्रवाई की। इसके चलते उनकी मिलीभगत खुलकर सामने आ गई।

पेज 8 का शेष....

सत्ती रौ हवालो कांकरोली इतिहास में पं. कण्ठमणि शास्त्री भी दीदो। सं. 1751 में गोमती में वेग सूं पाणी आवा सूं कांकरोली अर आसोट्या में चारूमेर पाणी इ पाणी वेइग्यो। तीन दन तक प्रभु श्री द्वारकाधीश में देवलमंगरी पै ऊंचा बैवाड्या अर चणां री दाल रौ भो लगायो। चणा री दाल नै देवल कैबा रै कारण मगरी रौ नामकरण दवेल मगरी पड्यो। आज कल अठे चिम सेवा व्हेवे हैं। गुजरात सूं अेक जंगी नाव लायर सागर में तैराई गी। आज सूं लगभग साढा तीन सौ बरसां पैली वणयोड़ो तालाब रौ पाणी रौ लेवल कारीगरां अेक जस्या राख्यो। जी पंगत्या पै नौ चौकी पै पानी आवे, वीं नम्बर रा पगत्या पै कांकरोली री पाल अर एरिगेशन वाली पाल पै ई आवे। चौदहवीं सरग में रूपणगढ़ री राजकुंवरी चारूमती रै नाम सूं राजनगर में अेक बावड़ी बंधाई गी जो मठ रै भड़े हैं। इतिहास कैवे के नौ चौकी रे पूरब वाला मंगरा पै दरबार रा वंचासी दयालशाह हैं। जैनी कावड़िया भव्य आदिनाथ रौ देवरा वणायोग जिमे खूब खरचो करयो। इने औरंगजेब री फौजां आयर तोड़ी ही। वणी दाण री अेक घटना म्हूं देणो चाऊं हूं।

दरबार रायसिंघजी आस-पास रा सरदारां नै अंक कागद लिखर हुकम दियो क आप नौ चोकी ऊपरे तैनात रीजो क्यूंक बादशाह री फौजां आवेला, तालाब ने बचावणो हैं। सब सरदार, उमराव भेलाविया जिंणा में केलवा, आमेट, सरदारगढ़, कोठारिया, बिनोल, देवगढ़ चुण्डावत, राठौड़ अबर झाला भेला वीया हां, पण कणी दरबार नै खबर करीक अन्नदाता। बादशाह री फौजां तो मन्दर री मूरतां ने तोड़े हैं। तालाब अर पाणी रा बांध नी तोड़े। ई खबर नै दरबार अेक सवार नै खत लिखर हरू करयो जणी में आ ही बात लिख्योड़ी हैं। आगे हुकम दीदो क सभी ठिकाणादार आपके आपणे ठिकाणे वरा जाजो। ओ कागद नामजद लिख्यो ग्यो हो, वी में बिनोल रा राठौड़ अंगददेव रौ नाम लिखणो भुलावा सूं अंगद देव अठे हीज लड मरंया। वणां री छतरी नौ चौकी रै दरवाजा बारे जलदाय री टंक्या रे कोड़े बणी थकी हैं।

तालाब रौ उजमणो सं. 1732 में महाराणा नै आपणे परिवार राण्यां रै लार आपणे पंगा व्रत राखर 24 मील री परिक्रमा की अर दान दियौ। बामण ने हाथी, घोड़ा, सोना, चाँदी अर डोल्या दान देयर सनमान करयौ। सब रजवाड़ा, ठाकर, सेवक, कारीगर अणी आमणा में अणंद सूं भाग लियो।

आज ई तालाब रा पाणी सूं जीव, जानवर, करसा, मनख लाभ उठाय रीया हैं ओ दरबार रायसिंघजी रौ उपकार ही हैं। वे विद्वान अर साहितकार भी हा। वणा रौ एक छप्पय जो राजसमन्दर रै पास वाला झरोखा पै लिख्योड़ो हैं, खुद रो वणायोड़ो हैं।

कहां राम कहां लखण, नाम रहिया रामायण।
कहां कृष्ण बलदेवव, प्रगट भागीत पुरायण।
बालमीक सुरू व्यास, कथा कविता न करतां।
कुण सरूप सेवता, ध्यान मन कवण धरतां।।
जग अमर नाम चाहो जिके, सुणो-सुणो सजीवण अबखरां
राजसी कहे जग राण रो, पूजो पांव कवेसरा।।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार व इतिहासकार
कांकरोली

अर्थपूर्ण है हमारी हिन्दु संस्कृति

एक माँ अपने पूजा-पाठ से फुर्सत पाकर अपने विदेश में रहने वाले बेटे से विडियो चैट करते वक्त पूछ बैठी-

बेटा! कुछ पूजा पाठ भी करते हो या नहीं?

बेटा बोला-

माँ, मैं एक जीव वैज्ञानिक हूँ। मैं अमेरिका में मानव के विकास पर काम कर रहा हूँ। विकास का सिद्धांत, चार्ल्स डार्विन... क्या आपने उसके बारे में सुना भी है?

उसकी माँ मुस्कुरा कर बोली-

मैं डार्विन के बारे में जानती हूँ बेटा। उसने जो भी खोज की, वह वास्तव में सनातन धर्म के लिए बहुत पुरानी खबर है।

हो सकता है माँ! बेटे ने भी व्यंग्यपूर्वक कहा।

यदि तुम कुछ होशियार हो, तो इसे सुनो। उसकी माँ ने प्रतिकार किया। क्या तुमने दशावतार के बारे में सुना है? विष्णु के दस अवतार?

बेटे ने सहमति में कहा-

हाँ! पर दशावतार का मेरी रिसर्च से क्या लेना देना ?

माँ फिर बोली-

लेना- देना है। मैं तुम्हें बताती हूँ कि तुम और मि. डार्विन क्या नहीं जानते हैं?

पहला अवतार था मत्स्यश यानि मछली। ऐसा इसलिए कि जीवन पानी में आरम्भ हुआ। यह बात सही है या नहीं?

बेटा अब ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

उसके बाद आया दूसरा अवतार कूर्मश अर्थात् कछुआ। क्योंकि जीवन पानी से जमीन की ओर चला गया। उभयचर तो कछुए ने समुद्र से जमीन की ओर के विकास को दर्शाया।

तीसरा था श्वराह अवतार, यानी सूअर। जिसका मतलब वे जंगली जानवर, जिनमें अधिक बुद्धि नहीं होती है। तुम उन्हें डायनासोर कहते हो।

बेटे ने आंखें फैलाते हुए सहमति जताई।

चौथा अवतार था नृसिंहश, आधा मानव, आधा पशु। जिसने दर्शाया जंगली जानवरों से बुद्धिमान जीवों का विकास।

पांचवें श्वामन हुए, बौना जो वास्तव में लंबा बढ़ सकता था। क्या तुम जानते हो ऐसा क्यों है? क्योंकि मनुष्य दो प्रकार के होते थे- होमो इरेक्टस (नरवानर) और होमो सेपिअंस (मानवद्ध) और होमो सेपिअंस ने विकास की लड़ाई जीत ली।

बेटा दशावतार की प्रासंगिकता सुन के स्तब्ध रह गया।

माँ ने बोलना जारी रखा-

छठा अवतार था परशुरामश, जिनके पास शस्त्र (कुल्हाड़ी) की ताकत थी। वे दर्शाते हैं उस मानव को जो गुफा और वन में रहा। गुस्सैल और असामाजिक।

सातवां अवतार थे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामश, सोच युक्त प्रथम सामाजिक व्यक्ति। जिन्होंने समाज के नियम बनाए और समस्त रिश्तों का आधार।

आठवां अवतार थे- भगवान श्री कृष्ण, राजनेता, राजनीतिज्ञ, प्रेमी। जिन्होंने समाज के नियमों का आनन्द लेते हुए यह सिखाया कि सामाजिक ढांचे में रहकर कैसे फला- फूला जा सकता है।

बेटा सुनता रहा, चकित और विस्मित।

माँ ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित रखी-

नवां अवतार थे महात्मा बुद्ध, वे व्यक्ति जिन्होंने नृसिंह से उठे मानव के सही स्वभाव को खोजा। उन्होंने मानव द्वारा ज्ञान की अंतिम खोज की पहचान की।

और अंत में दसवां अवतार कल्कि आएगा। वह मानव जिस पर तुम काम कर रहे हो। वह मानव, जो आनुवंशिक रूप से श्रेष्ठतम होगा। बेटा अपनी माँ को अवाक् होकर देखता रह गया।

अंत में वह बोल पड़ा-

यह अद्भुत है माँ..., हिंदू दर्शन वास्तव में अर्थपूर्ण है!

तभी तो कहा गया है कि वेद, पुराण, ग्रंथ, उपनिषद इत्यादि सब अर्थपूर्ण हैं। सिर्फ आपका देखने का नज़रिया होना चाहिए। फिर चाहे वह धार्मिक हो या वैज्ञानिक।

व्यक्तित्व और विकास के लिए जरूरी है वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

डॉ. बसंतीलाल बाबेल
पूर्व न्यायाधीश

सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही के कर्नाटक राज्य बनाम प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय प्रबन्धन (ए.आई.आर. 2014 एस.सी. 2094) के मामले में यह कहा हैं कि 'वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रत्रता व्यक्तित्व-विकास के लिए आवश्यक हैं।' टाटा प्रेस लि. बनाम महानगर टेलीफोन निगम (ए.आई.आर. 1995 एस.सी. 2438) के मामले में भ कमोबेश यही कहा गया हैं।

संविधान के अनुच्छेद 19 में जिन छः स्वतंत्रताओं का उल्लेख किया गया हैं उनमें वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अहम् स्थान हैं। विचारों की अभिव्यक्ति एवं आदान-प्रदान का यह एक सशक्त माध्यम हैं। जिस देश में व्यक्ति को अपने विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं होती, वह देश न तो लोकतांत्रिक कहा जा सकता हैं और न ही कल्याणकारी। लोकतंत्र का यह तकाजा हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता हो। विचारों का दमन न हो।

हमारे संविधान की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता हैं कि इसके अनुच्छेद 19 (1) में नागरिकों को वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मूल अधिकार प्रदान किया गया हैं। यह अधिकार केवल विचारों की अभिव्यक्ति तक ही सीमित नहीं हैं, इसमें प्रेस की स्वतंत्रता, जानने का अधिकार अर्थात् सूचना का अधिकार आदि भी शामिल हैं। कोई भी व्यक्ति समाचार पत्रों में लेख, कार्टुन, विज्ञापन आदि के माध्यम से भी अपने विचारों को प्रकट कर सकता हैं। शब्दों, लेखों, मुद्रणों एवं चिह्नों आदि के माध्यम से भी विचार व्यक्त किये जा सकते हैं। सभा-संस्थाओं में भाषण, चुनाव आदि में प्रचार-प्रसार, इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से विचाराभिव्यक्ति आदि सभी वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में सम्मिलित हैं। विख्यात विविधवेन्ता एन.ए. पालकीवाला ने यह कहा हैं कि 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मानव हृदय में निवास करती हैं। मनुष्य की मृत्यु से पूर्व उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। जब इसकी सहायता कर सकता हैं।' अभिप्राय है कि वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मनुष्य के जीवन से जुड़ी हुई हैं। उसे मनुष्य से अलग नहीं किया जा सकता।

अमेरिका के प्रेस कमीशन ने एक बार कहा था- 'प्रेस की स्वतंत्रता राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आवश्यक हैं। विचाराभिव्यक्ति ककी स्वतंत्रता के अभाव में कोई भी अन्य स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं रह सकती। वह वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही हैं, जिससे स्वतंत्र समाज का निर्माण होता हैं।'

भारत के प्रेस कमीशन का यह कहना हैं कि - 'प्रेस एक ऐसा माध्यम हैं जिससे लोकमत स्पष्ट होता हैं। यह लोकमत ही हैं, जिसके आंचल में प्रजातंत्र पल्लवित एवं पुष्पित होता हैं।' हम 'सूचना के अधिकार' को लें। सर्वोच्च न्यायालय ने 'पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया' (ए.आई.आर. 2004 एस.सी. 1442) के ममामले में सूचना के अधिकार को वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ही एक अंग ममाना हैं। 'प्रभुदत्त बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया' (ए.आई.आर. 1982 एस.सी. 6) के मामले में तो जेल में बंद कैदियों एवं बंदियों से साक्षात्कार करने को भी सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही माना गया हैं।

सूचना के अधिकार से शासन-प्रशासन में पारदर्शिता छलकने लगी हैं। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा हैं। अब शासन-प्रशासन का मनमानापन भी नहीं चल सकता। कुल मिलाकर वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देश की जनता को आजादी का एक महत्वपूर्ण उपहार हैं। लेकिन यहा यह उल्लेखनीय हैं कि वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अबाध अर्थात् निरपेक्ष नहीं हैं। व्यक्ति इसका मनमाना उपयोग नहीं कर सकता और न इसका दुरूपयोग कर सकता हैं। अनुच्छेद 19 (2) के अन्तर्गत इस स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किया जा सकता हैं, उनमें मुख्य- (क) राज्य की सुरक्षा (ख) विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध (ग) शिष्टाचार एवं सदारचा (घ) लोक-व्यवस्था (ड) न्यायालय का अवमान (च) मानहानि (छ) अपराध उद्दीपन तथा (ज) भारत की प्रभुता एवं अखण्डता।

बम्बई उच्च न्यायालय ने 'इण्डियन होटल्स' (ए.आई.आर. २००६ एन.ओ.सी.९०१ बम्बई) के मामले में यह कहा हैं कि नृत्यु करना वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ही एक अंग हैं लेकिन जब यह अश्लील हो जाता हैं तो उसे प्रतिबंधित किया जा सकता हैं। यदि विचारों की अभिव्यक्ति से लोक व्यवस्था बिगड़ती हैं अथवा बलवा आदि को प्रोत्साहन मिलता हैं तो उसे नियंत्रित किया जा सकता हैं। (बिहार राज्य बनाम शैलबाला, ए.आई.आर. 1952 एस.सी. 329)। आजादी का यह पर्व हमम विचारों की अभिव्यक्ति के साथ मनाए, लेकिन इसके दुरूपयोग से बचे और इसका मनमाना उपयोग नहीं करें।

पढ़ाई का इम्तिहान इस माह, ये टिप्स रखेंगे 'टेंशन फ्री'

परीक्षा के संबंध में टिप्स जानने से पहले एक कहानी से गुजरना बेहतर रहेगा। क्योंकि ये टिप्स का एक हिस्सा ही होता हैं, तो साथियों कहानी हैं– एक छोटे से बच्चे की, जो कब से एक कील पर लटके एक थैले को देख रहा था। वह बड़ी देर से उस कील पर से थैले को निकालने का प्रयास कर रहा था, पर बच्चा तो बच्चा था। लम्बाई उस कील से काफी कम थी। वो कील लगभग बच्चे से तीन गुना ऊंचाई पर थी और उसे छू पाना उसके लिए लगभग असंभव था।

इस असंभव बात से बेखबर वह बच्चा लगातार उचक–उचक कर उस थैले को निकालने का प्रयास कर रहा था। ना ही उसको इस प्रयास के लिए कोई टोकने वाला था और ना ही कोई मदद करने वाला। बार–बार प्रयास के बाद भी वह असफल हुआ तो थोड़ी देर सोच कर दूसरे कमरे में रखा, एक स्टूल ले आया परंतु अब भी बात बनी नहीं। अभी भी कील उसकी अंगुलियों से थोड़ी ऊंचाई पर थी। लड़का थोड़ा सा मायूस हुआ, परंतु फिर से कील को देखा और स्टूल पर से ही उचक कर उसे पाने का प्रयास करता रहा। इसी क्रम में वह कई बार स्टूल के संतुलन के बिगड़ जाने से जमीन पर भी गिरा। एक बार तो उसके नाक पर चोट लगी और थोड़ा खून भी निकल आया, पर अजीत सी जिद पकड़ रखी थी उसने। वह फिर आत्मविश्वास के साथ खड़ा हुआ, दर्द और खून को नजरअंदाज करते हुए उसने एक बार फिर पूरी ताकत लगाकर प्रयास किया।

खुद के लिए बनाए संक्षिप्त नोट्स

विद्यार्थियों को पढ़ने के दौरान सक्षिप्त नोट्स बनाने चाहिए। वो भी खास तौर से ये सोच कर की आखरी के एक घंटे में पूरे सिलेबस का दोहरान हो जाए। इस तरह के नोट्स में सिर्फ मुख्य बिन्दुओं को लिखे और वो भी पहले याद करके उसके दोहराने में अपनी नोट बुक में लिखे। इस तरह से नोट्स बनाने से आपकी लिखने, पढ़ने और याद रखने की क्षमता का विकास होगा और आपकी डायरी आपके लिए परीक्षा के अंतिम समय में आपकी सबसे बड़ी सहयोगी के रूप में आपका साथ निभाएगी। याद रखे किसी और के नोट्स कॉपी करने से आपका फायदा नहीं होगा, बस बताए गए तरीके से खुद के लिए खुद नोट्स बनाए।

एक बार भी स्टूल गिरा और लड़का मुंह के बल जमीन पर था, परंतु इस बार वह खाली हाथ नहीं था। जिस थैले के लिए वो इतनी देर से प्रयास कर रहा था, वो उसके हाथ में था और चेहरे पर सुकून की चमक। बस इतनी सी कहानी हैं, पर बात बहुत पते की हैं कि अगर कुछ पाने का प्रयास करो तो पूरी शिद्दत से करो। जिद पूरी करो तो आपको वो मिल ही जाता हैं, जिसकी आपको जरूरत होती हैं। अगर कुछ पाने की, कुछ कर गुजरने की जिद हैं, तो आपके काम की हैं ये टिप्स–

स्मार्ट स्टडी से मिलेगी कामयाबी

दुनिया में हर काम को करने के कम से कम दो तरीके होते हैं। वैसे ही स्टडी करने के भी दो प्रमुख तरीके हैं– स्मार्ट स्टडी और गधा मजदूरी। यहां पर हम आपको सलाह देते हैं कि सबकुछ बिना किसी योजना के पढ़ना बिल्कुल गधा मजदूरी करने जैसा हैं। अर्थात् बहुत मेहनत के बाद भी उचित परिणाम नहीं मिलता हैं। स्मार्ट स्टडी के लिए आपको सबसे पहले उन अध्यायों को पढ़ना चाहिए जो आपके पसंद के हैं या जिनमें आपकी रूचि हैं। इस तरह के पाठ आपकी पढ़ने की रूचि को बढ़ाएगी। इस तरह के पाठों के बाद रेफरेन्स वाले अध्यायों का चयन करें, जिससे संबंध में कोई ना कोई जानकारी आपके अब तक पढ़े हुए पाठों में से होगी, जो आपको ये विश्वास दिलाएगी कि ये सब आपके लिए आसान हैं। इस तरह से अगर आप आगे बढ़ेंगे तो आपको पता ही नहीं चलेगा कि कब सारा का सारा सिलेबस आपको याद हो गया और आपकी डायरी में आपके नोट्स के रूप में आपका साथ निभाने को तैयार मिलेंगे।

बनाना होगा स्मार्ट टाइम टेबल

वैसे तो पढ़ने का कोई टाइम नहीं होता, जब आदत लग जाती हैं, तो हर समय कायनात आपको मौका दे देती हैं। पढ़ने के लिए, परन्तु स्मार्ट स्टडी में एक स्मार्ट टाइम टेबल का होना बहुत जरूरी होता हैं। क्योंकि पढ़ने के अलावा भी बहुत सी चीजें हैं, जो आपको परीक्षा के लिए तैयार करती हैं। वो कहते हैं ना अति सर्वत्र: वर्जिते, ज्यादा पढ़ाई और लिखाई से स्वास्थ्य पर कहीं ऐसा असर ना पड़ जाए कि आप परीक्षा के दिन परीक्षा देने के लायक नहीं बचे। टाइम टेबल की हर सप्ताह समीक्षा करें और इसमें स्टडी के लिए धीरे–धीरे समय बढ़ाएं। इससे नियमित अध्ययन आसान रहेगा।

लिखने का अभ्यास जरूरी

वैसे तो लिखने का अभ्यास स्मार्ट स्टडी का हिस्सा हैं और हम इस पर पहले ही बात कर चुके हैं। आप जानते हैं कि आपके पास परीक्षा में एक निश्चित समय होता हैं और आपको उसी समय में अपने उत्तर लिखने होते हैं। आपको लिखने का अभ्यास आपको याद करने के साथ परीक्षा की नेट प्रैक्टिस भी करवाएगा। साथ ही आप सैंपल पेपर को आपकी परीक्षा के निश्चित समय के अनुसार हल करने का प्रयास भी समय-समय पर करते रहे। आप इस तरह का अभ्यास नहीं करेंगे तो भले ही आपको सबकुछ याद होगा, परंतु घड़ी के कांटे आपका सहयोग नहीं करेंगे।

सोशल मीडिया से दूर रहे

आजकल इंटरनेट का जमाना हैं और इसका उपयोग आपके ज्ञान को बढ़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इंटरनेट का इस खूबी के साथ-साथ एक बहुत बड़ी समस्या भी हैं जो इसके एक लाभदायक पहलू सोशल नेटवर्किंग की देन हैं। सोशल नेटवर्किंग आपका समय आपसे कैसे छीन लेता हैं ये हमको पता ही नहीं चलता हैं और साथ ही इस पर नजरें लगाए रखने से मस्तिष्क पर एक अलग तरह का दबाव बनता हैं, जो अध्ययन के लिए नुकसानदायक होता हैं।

समाचार पत्र पढ़ने की आदत डाले

समाचार पत्रों से आपको पढ़ने की आदत तो लगेगी ही साथ ही आपकी परीक्षा के लिए नई संदर्भ सामग्री मिलेगी। उदाहरण के लिए अगर आपके पेपर में आपातकाल का सवाल होता हैं और आपकी पुस्तक में इंदिरा गांधी के समय के आपातकाल का जिक्र हैं और आप उसके साथ-साथ अगर सिर्फ मालदीप के नाम का उल्लेख भी कर देते हैं तो परीक्षक पर अत्यधिक प्रभाव पड़ेगा और आपके अच्छे नंबर प्राप्त करने की तरफ एक सार्थक कदम होगा।

ध्यान और योग करें

परीक्षा की तैयारी के दौरान मन को स्वस्थ रखना बहुत आवश्यक हैं। इसके लिए सुबह-सुबह निश्चित समय पर प्राणायाम करें, जिससे आपका दिमाग शांत और स्थिर रहेगा। इस योग और ध्यान के कारण स्वास्थ्य तो सही रहेगा ही, साथ ही आपके पढ़ने और याद रखने की क्षमता में सुधार होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें

परीक्षा के दौरान स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक हैं। क्योंकि कहीं ऐसा ना हो जाए कि रात-दिन लगकर जिस परीक्षा के लिए मेहनत की थी, उस परीक्षा के दिन हम डॉक्टर्स के हवाले हो जाए। पढ़ाई के दौरान खाने पीने की वस्तुओं का चयन संभल कर करना चाहिए और खासतौर से हल्का खाना ही खाना चाहिए। मसालेदार, फ्राइड जंक, फास्ट फूड से तो पूरी तरह से किनारा कर लेना चाहिए। क्योंकि इस तरह का भोजन करने के कारण आपको नींद आ सकती हैं और स्वास्थ्य पर भी असर हो सकता हैं।

सावधानी से चयन कर सवालों को हल करें

परीक्षा के दौरान आपके मन को शांत रखे और प्रश्नपत्र मिलते ही पहले आपको ध्यान से पढ़कर तय करें कि कौनसे सवाल का उत्तर आप सबसे बेहतर तरीके से दे सकते हैं। इस सवाल का अपना महत्व हैं। क्योंकि एक तो यह परीक्षक के सामने आपकी इमेज बनाएगा कि आप किस तरह के विद्यार्थी हैं और दूसरा आपका आत्मविश्वास भी बढ़ाएगा। साथ ही आसान सवाल पहले करने से आप समय का सदुपयोग भी कर पाएंगे। इन बातों के अलावा भी बहुत सारी बातें हैं जो आपके काम आ सकती हैं, लेकिन एक खास बात का ध्यान रखना कि ये आपकी अपनी लड़ाई नहीं हैं। ये तो सिर्फ ऐसा हैं कि जैसे आपने रसोई में खाना पका लिया हैं बस अब खाना खाने का इंतजार हैं। मतलब साफ हैं कोई तनाव ना रखे और स्मार्ट स्टडी की तरह ही स्मार्ट एग्जाम देकर इसका आनंद ले। बस उस कहानी के बच्चे की तरह जिद पूरी करना।

जीका-विलायतीराम का आमना सामना

बात बिल्कुल नए जमाने की है। आखिर मीडिया अपना काम कर ही रही है। इस खबर से अपने पाण्डेय जी कुछ ज्यादा ही उत्साहित है। होना भी चाहिए, आखिर अखबार को दीमक की तरह चाट जाते थे। पत्नी उनकी जरूरत से ज्यादा दु:खी थी, दु:ख का आसमान हर पल उस पर मंडराता रहता, जब इच्छा हो जाती, तब बरस जाती।

वैसे भी भारतीय महिलाओं को बरसने के पंचांग को देखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

बाजार में चली जाए, दुकानदार पगला जाते हैं। भैया यह साड़ी कितने की दी, अच्छा बताओ, बुधवार को कहा था नया स्टॉक आ जाएगा, आया क्या? पकाने में उस्ताद। देश के पति आखिर आजिज आ चुके थे आखिर उनका भी कोई स्टेटस है कि नहीं। जब देखो अपने महिला मंडल में हर पत्नी अपने पति की चुगली मन भर न कर ले, उसे खाना नहीं पचता।

अभी बाजार में सेल का जोर जारी था। पत्नी के प्यार से आतंकित पति। आई मीन अपने लोकप्रिय महल्ला प्रेमी विलायतीराम पाण्डेय का सर आज दफ्तरी काम से दु:खी था। क्या करें, सरकारी बाबू था।

वह भी उस विभाग में जिसका काम था खंभे पर बल्ब लगाना यानी जहां अंधेरा, वहां उजाला लाने का जिम्मा। अपने काम में कतई कोताही नहीं बरतते थे, जो कह दे उसके खंभे पर बल्ब जगमगाने लगता।

खुद पाण्डेय जी को बड़ी राहत मिलती थी। चलो उनके प्रयास से कहीं तो उजाला है। आए दिन के अपराध में भी उनके उजाले से कटौती हुई थी।

आज घर जरा जल्दी आ गए। सोचा सर दर्द है, तो पत्नी बाम लगा देगी, पर भला हो महिला मंडल की किट्टी पार्टी का, जिस कारण पत्नी जी कहां थी। वह तो तैयार हो खुशबू वाला इत्र छिड़क कर कहीं तफरी करने चली गई। कमरे में बिस्तर पर पड़ा पाउडर का डिब्बा और इत्र की शीशी पूरे मन से चुगली कर रही थी।

दर्द था जो बढ़ता ही जा रहा था। जैसे नगर निगम का पाइप पानी वाला पिछले कई दिन से आजादी महसूस कर रहा था और सोनू के जुकाम की मानिंद बहने में अपनी शान समझ रहा था। आखिर

आजाद भारत की स्वतंत्र इकाई के सदस्य प्राउड भी फील न करें। यह कभी हो सकता है, नहीं न।

थका हारा हमारा बेचारा अंधेरे को उजाले में बदल देने वाला विलायती राम बुखार में तपने लगा। आवाज भारी हो गई। लगा कहीं कोई बेसुरा राग ही अलाप दिया, तो किसी अलग दर्जे की संगत न लग जाए।

बहरहाल घर की महारानी, विलायतीराम पाण्डेय के घर आ ही गई। शाम के हसीं वक्त में, उनके पास डुप्लीकेट चाबी रहती थी। आई तो देखा पाण्डेय जी बिस्तर पर ऐसे पसरे पड़े है। जैसे अब गए और तब गए की हालत हो। हालात भी कुछ ऐसे ही थी।

तभी श्रीमती ने फोन लगा दिया अपनी सहेली को, कहने लगी बहन क्या करूं। पति कुछ ठीक नहीं लग रहे। अभी आई तो देखा, कुछ बोल ही नहीं रहे और बिस्तर पर बेसुध सी हालत में पड़े है। वैसे तो अच्छा ही है, दूसरी तरफ से आवाज थी।

हमारे सामने पतियों की क्या औकात जो बोल जाए, पर बहन जैसा भी है, घर चलाता है, खिलाता भी है, यार कुछ ख्याल तो रखना ही चाहिए।

कह तो तुम ठीक कह रही हो... श्रीमती पाण्डे की पत्नी बोली।

अच्छा कुछ करती हूं। उसने फोन रख दिया। इधर पत्नी अपने फ्रेंड के कॉल की प्रतीक्षा में थी। तभी मन बहलाव के लिए टीवी ऑन कर दिया, जिसमें पहला ही समाचार था।

देश और दुनिया में इहबोला के बाद एक खतरनाक बीमारी बहुत तेजी से पांव पसार रही है, उसका नाम जीका है। यह एक घातक वायरस है, जिसका आक्रमण अब तक बीस देशों पर हो चुका है। यह वायरस बहुत सीधे साधे मनुष्यों पर निशाना साधता है। इसके आक्रमण से कंपकंपी, बुखार, जी मिचलाना, जोड़ों का दर्द इतनी तेजी से फैलता है। यदि आप मजबूत नहीं हुए तो यह आपको अपनी लपेट में ले लेगा और महीनों आप बिस्तर पर। कुछ करने की हालत में भी नहीं रहेंगे।

पत्नी को लगा कहीं पाण्डेय जी इस लपेट में तो नहीं आ गए। तभी उनके माथे पर ठंडी पट्टियां रख कर जोर जोर से कहे जा रही थी भूत पिसाच निकट नहीं आवे, महावीर जब नाम सुनावे। आवाज जोरदार थी। बगल के महावीर ने सुना– कहने लगा, भाभी जी काहे आवाज लगाई। मिसेज पाण्डेय ने पुकार को दरकिनार कर दिया, कोई और दिन होता तो सुन लेती। आज उसके एकमात्र पति का मामला था। वह उसको खोना नहीं चाहती थी। चाहती थी हमेशा के लिए उसकी बाहों में खो जाए। हर पत्नी का लास्ट निष्कर्ष यही होता है। वैसे चाय पानी को पति पूछ ले, तो पत्नियों का मुंह फूल जाता है। जैसे उनको चाय बनाने अमेरिका जाना पड़ेगा। कुढ़ती सब है, उनकी चाय से, पर मज़बूरी में दे देती है अलसाई चाय।

बहरहाल विलायती राम पाण्डेय को थकावट के साथ झपकी लग गई थी। जब आंख खुली तो मिसेज उनके पांवों पर झुकी थी। आंखों में आंसू थे, चेहरे पर उम्मीद के भाव, ठीक हो जाओ प्रभु वाले।

सुनो जी, अब मैं कहीं नहीं जाऊंगी। आप के साथ जन्म जन्मान्तर तक साथ निभाऊंगी। पाण्डेयजी आकस्मिक प्रेम पर न्योछावर हुए जा रहे थे। उन्होंने कहा भाग्यवान आज दफ्तर में मन नहीं लगा, सोचा तुम्हारे हाथ की अदरक वाली चाय पीउंगा और ठीक हो जाऊंगा। ऐसा, मैं तो समझी कि आपको कहीं जीका ने लपेट तो नहीं लिया। बड़ा खतरनाक कीटाणु है, अभी टीवी पर समाचार सुना। अब बोलने की बारी अपने विलायती राम की थी। कहने लगे– डार्लिंग तुम्हारे होते हुए मुझे किसी और वायरस की जरुरत रत्ती भर भी नहीं, अच्छा सुनो, चाय बना लाओ।

पत्नी ने चाय की बात सुनी और वायरस की नहीं। आखिर बाल बाल बचे विलायती राम पाण्डेय जी।

दुनिया भी कमाल की, बच गए पाण्डेय जी। बच गया पत्नी का सुहाग। पत्नी हनुमान जी की मूरत के सामने मूरत बनी खड़ी थी। पाण्डेय जी का प्यार पत्नी को ले अपने सपने में तैरने लगा। आखिर किसी जमाने में नेशनल तैराक थे।

कविता में लिख देते थे समस्या

मेवाड़ की धरा अपूर्व रत्नों की खान है। यहां की प्रतिभाओं ने अनेक क्षेत्रों में नाम रोशन किया। साहित्य के अंकुर भी इस मिट्टी में पैदा हुए, जिन्होंने देश विदेश तक मेवाड़ को गौरवान्वित किया है और निरन्तर करते आ रहे है। आज मैं एक शख्सियत का परिचय 'माटी के लाल' शीर्षक से कवि घनश्याम का देना चाहता हूं। कवि घनश्याम का जन्म विक्रम संवत 1916 में कांकरोली में हुआ। उनके पिता चतर सनाढय थे, जो श्री द्वारिकाधीश मंदिर और ग्राम में पुरोहिताई का काम करते थे। आप भी परम्पराओं के अनुसार उसी कार्य में प्रवृत्त हुए। बालपन से ही आपको कविताओं से प्रेम था। हालांकि आप पढ़े लिखे विशेष नहीं थे। आप श्री बालकृष्णजी महाराज की माताजी को प्रतिदिन कविताएं सुनाया करते थे। माताजी को कविता सुनने का बड़ा अनुराग था। अत: वे कवि की प्रतिभा को बढ़ाने के लिए पुरस्कार भी दिया करती थी। इस हौंसला अफ़्ज़ाई की वजह से आप अनूठे ढ़ग से कविताएं करना सिखने लगे। मित्र मण्डली या किसी भी जगह आप बैठते, वहां आशु कविताएं फूट पड़ती थी। समस्यापूर्ति पर आप तुरन्त कविताएं लिख सुना देते थे।

जैसे सरोता के बीच सुपारी....,

ऐसी कई कविता है जो आपकी प्रतिभा का परिचय और आज भी लोगों की जुबान पर चढ़ी हुई है। आपकी रूची साहित्य के सभी रसो में थी। आपका लिखा खेल, चन्द्र कुवंर बहुत प्रसिद्ध हुआ। आपने श्री द्वारिकेश प्रभु महामात्य, नौचोकी वर्णन, कांकरोली वैभव वर्णन, समुद्र वर्णन आदि किया। किसी कारणवश आप कांकरोली छोड़ नाथद्वारा चले गए। उन दिनों सालिग्राम जी व्यास राजकीय कार्य अधिकारी थे। वो कविताओ के बड़े शौकिन थे। व्यास जी आपकी प्रतिभा के बहुत कायल हो, उनके बड़े स्नेही हो गए। आपको नाथद्वारा मंदिर की तरफ से बीकानेर में श्रीनाथजी की पेढ़ी का भंडारी बनाकर भेज दिया, परन्तु कवि घनश्याम स्वतंत्रता प्रेमी और मनमौजी होने के कारण बहुत दिनों तक वहां ठहर नहीं पाए और फिर नाथद्वारा आ गए।

अनन्तर श्री नाथद्वारा महाराज श्री गोवर्द्धनलाल जी आपको जीवन यापन के लिये भले मानुष का मुखिया बना कर प्रतिष्ठित पुरुषों में स्थान दिया। उस पर आपने–

''छाजत छबीलो छत्र धारिण को छत्रपति''
''प्रबल प्रतापी रूप राजत रसाल को''
''भूप ही विलोके तेज गोवर्द्धन लाल को।''

इस कविता से सराहना की। नाथद्वारा में रहकर आपने कई ग्रंथ, महबूब सागर, घनश्याम सागर, वैराग्य पचासा, छप्पन भोग वर्णन है।

एक समय महाराणा उदयपुर ने अपनी राजपुत्री का विवाह जोधपुर नरेश के साथ किया, जिस समय तौरण के पास जोधपुर के महाराणा पहुंचे। उस समय हाथी अचानक मचल पड़ा। कविवर वहां उपस्थित थे। उन्होने कहने पर तत्काल ही कविता बनाकर पढ़ सुनाई।

'आयो जोधपुर ते जरूर श्री जोधानाथ..'
'हिन्दवान भान के तोरण के द्वार पर,
गज ने प्रमाद देख मस्तक हिलायो है।।'

अब कविता सुन कवि का नाम धाम पूछा गया, तो आपने कहा

प्रथमतोविप्र ब्रजवासी ब्रजपतिजू को, नाम घनश्याम कछु सुयश प्रकाशि हूँ।

इस पर महाराणा ने प्रसन्न होकर अन्य कविताओं को सुनने की इच्छा प्रकट की, तब आपने आखेट, उदयपुर का वर्णन सुनाया। महाराणा की प्रशंसात्मक पद् भी कहे। उस पर महाराणा ने कवि घनश्याम को 500 रुपए सम्मान स्वरूप भेट किए। अन्त में कवि घनश्याम सबको असहाय छोड़कर संवत 1968को बैकुंठ धाम सिधार गए। आपकी कविता की प्रशंसक कुण्डली चारण ने यह यह दु:खद समाचार सुना, तो बड़ी दु:खी हुई और मुंह से निकल पड़ा हाय, अन्त में कहने लगी।

जाकी कविता मन्त्र जस जपत लोग अठ जाम,
अहे अमर या जगत में मरे नहीं घनश्याम और
दिव जाने घनश्याम को सब जग छायो सोर!
मार जिवावे पलक में ता प्रभु सो कहा जोर!!

आज कवि घनश्याम हमारे बीच देह रूप में नही है, पर विद्या विभाग मंदिर मण्डल के प्रकाशन की वजह से बरसो बाद भी एक किताब श्री घनश्यामसागर में काव्यात्मक रूप में दिलो पर राज कर रहे हैं। मैं तो अन्त में अपने मुक्तक के माध्यम से ये भाव प्रकट करूंगा कि

हम लोग शायर है फंकीराना हमारी हस्ती है।
दिलो में रहते हैं, वरना कहां हमारी बस्ती है।।
जज़्बातो के कागज़् पे अल्फ़ाजो की माला से।
कलम से गीत को लिखते यही हमारी मस्ती है।।

श्री घनश्याम सागर पढ़ने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ, माटी के लाल कालम में कवि घनश्याम का परिचय युवा पीढ़ी को साहित्य के लिए कारगर होगा। आज भी श्री घनश्यामसागर नाथद्वारा मंदिर मण्डल के पुस्तकालय विभाग में बहुत कम रुपए में उपलब्ध है। साहित्य प्रेमी वहां से यह पुस्तक खरीद सकता है।

प्रस्तुतकर्ता : सूर्य प्रकाश दीक्षित,
साहित्यकार काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

अग्नि को साक्षी मान कर लिए सात फेरे, एक-दूजे के हो गए 68 जोड़े

प्रेरक पहल कलाल समाज का आमेट व भाट समाज का भीम में सामूहिक विवाह सम्मेलन

कलाल समाज का सामूहिक विवाह

भाट समाज का सामूहिक विवाह

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

मेवाड़ा क्षत्रिय कलाल समाज मदारिया की ओर से आमेट में एवं भाट समाज सेवा संस्थान की ओर से पाटिया ग्राउंड भीम में आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में 68 जोड़े सात फेरों के साथ ही एक दूजे के हो गए। कलाल समाज का यह दूसरा सामूहिक विवाह सम्मेलन है, जबकि भाट समाज का पहला विवाह सम्मेलन भी ऐतिहासिक रहा।

मेवाड़ा समाज विवाह समिति अध्यक्ष कैलाश मेवाड़ा ने बताया कि सम्मेलन में 51 जोड़े विवाह के बंधन में बंधे। इस दौरान समाज के प्रदेशाध्यक्ष नेमीचंद पंवार, युवा महासभा राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश शाह, पूर्व विधायक हगामीलाल मेवाड़ा, उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, भीम विधायक हरिसिंह रावत, सांसद हरिओमसिंह राठौड़, जिला प्रमुख प्रवेश कुमार सालवी सहित कई जनप्रतिनिधि व समाजजन मौजूद थे।

भाट समाज अध्यक्ष राधेश्याम रूपावत ने बताया कि शोभायात्रा व बिंदोली के बाद सामूहिक विवाह हुआ, जिसमें 17 जोड़ों ने सात फेरे लिए। इस दौरान जिला प्रमुख प्रवेश कुमार सालवी पूर्व गृहमंत्री लक्ष्मण सिंह रावत, भाजपा जिलाध्यक्ष भंवरलाल शर्मा, हीरालाल भाट सहित कई समाजजन मौजूद थे।

लंबी बीमारी के बाद नाथद्वारा विधायक चौहान का निधन

राजसमंद. नाथद्वारा विधायक कल्याणसिंह चौहान लंबे समय से बीमारी के चलते 20 फरवरी की रात को उदयपुर अस्पताल में निधन हो गया। बाद में उनकी पार्थिक को डगवाड़ा, नाथद्वारा लाया गया, जहां 22 फरवरी को अंतिम संस्कार कर दिया गया। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, पंचायतीराज मंत्री राजेंद्र राठौड़, उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, मगरा विकास बोर्ड अध्यक्ष हरिसिंह रावत सहित कई प्रदेश के मंत्री, विधायक व भाजपा के नेता शामिल हुए।

बताया गया कि वे लंबे समय से भोजन की नली में कैंसर की बीमारी से पीड़ित थे। नाथद्वारा के दूसरी बाद विधायक चुने गए चौहान ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री व राजनीतिक गुरू डॉ. सीपी जोशी को 1 वोट से शिकस्त देकर प्रदेश व देश की राजनीति में उभर कर सामने आए थे। हालांकि उससे पहले पंचायतीराज में भी सक्रिय जनप्रतिनिधि रहे।

संविदाकर्मियों ने टंकी पर चढ़ कर किया प्रदर्शन

जयवर्द्धन न्यूज @ नाथद्वारा
liverajsamand.com

ग्यारह माह से वेतन नहीं मिलने के विरोध में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग के संविदा कार्मिकों ने सुखाड़ियानगर नाथद्वारा स्थिति पेयजल टंकी पर चढ़कर विरोध प्रदर्शन किया। भूख हड़ताल के तहत एक कार्मिक की तबीयत भी बिगड़ गई, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। संविदाकर्मियों के टंकी पर चढ़ कर विरोध प्रदर्शन की सूचना पर मिलते ही नाथद्वारा उपखंड अधिकारी निशा अग्रवाल अन्य पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ ही मौके पर पहुंच गई। उनकी मांगों को लेकर ठोस कार्रवाई करने का आश्वासन देते हुए सभी कार्मिकों को नीचे उतारा गया। इसके बाद कांग्रेस जिलाध्यक्ष देवकीनंदन गुर्जर ने भी भूख हड़ताल पर बैठे जलदाय विभाग के संविदाकर्मियों से मुलाकात की।

साथ ही उनकी मांगों को जल्द पूरा करने के लिए नगरपालिका आयुक्त से मिले। आयुक्त ने जल्द ही उच्चाधिकारियों को अवगत कराते हुए समस्या का निस्तारण करने का आश्वासन दिया।

सात हजार की रिश्वत लेते भीम विकास अधिकारी गिरफ्तार

राजसमंद. भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो भीलवाड़ा के दल ने ग्राम सेवक से 7 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए भीम पंचायत समिति के विकास अधिकारी डॉ. प्रकाश सिरपाट को 19 फरवरी को रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। ग्रामसेवक से नरेगा कार्य स्वीकृति करने और उसका बजट पास करने की एवज में 10 हजार रुपए मांगे थे, जिसका भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने 15 फरवरी को ही सत्यापन करा लिया। इसके बाद एसीबी के एएसपी राजेश गुप्ता ने मय दल के भीम पंचायत समिति में दबिश देकर रंगे हाथ विकास अधिकारी सिरपाट को गिरफ्तार कर लिया।

हंगामे के बीच नगरपरिषद में सवा अरब का बजट पारित

राजसमंद. नगरपरिषद राजसमंद की साधारण सभा की बैठक सभापति सुरेश पालीवाल व उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी की मौजूदगी में हुई। बैठक में विपक्ष के हंगामे के बीच शहर विकास के लिए सवा अरब का बजट पारित कर दिया गया। शहर में चल रहे सड़क, नाली व अन्य विकास कार्यों की गुणवत्ता को लेकर विपक्ष ने आक्रोश जताया। पार्षद रवि गर्ग के कमला नेहरु अस्पताल के पास फिसलने कर गंभीर घायल होने को भी विपक्ष ने हंगामा किया। बात नहीं सुनने के विरोध में कांग्रेस के पार्षद बैठक के बीच में पहुंच गए, तब आयुक्त ब्रजेश राय ने उनकी बात सुनी। बाद में विपक्ष के सदस्य शांत हुए और बैठक की कार्रवाई आगे बढ़ पाई। बैठक में 4 अरब 14 करोड़ 51 लाख का बजट पारित कर दिया गया, जो पिछले बजट के मुकाबले साढ़े 6 करोड़ रुपए ज्यादा है।

जहरीली वनस्पति खाने से 48 भेड़े मरी

राजसमंद. कुंवारिया के पास खेत में चर रही 48 भेड़ों की जहरीली वनस्पति खाने से मौत हो गई। कोट पंथ, पाली निवासी डूंगाराम रेबारी सैकड़ों भेड़ों की रेवड़ चराने के लिए राजसमंद लाया। कुंवारिया के पास खेत में चरा रहा था, तभी जहरीली वनस्पति खाने से कई भेड़े बीमार हो गई और तड़पने लगी। बाद में पशु चिकित्सकों के दल ने आकर उपचार भी किया, मगर तब तक 48 भेड़ों ने दम तोड़ दिया।

चाकू से काट डाला पेट, बाहर निकल आई आंते

राजसमंद. शहर के पचास फीट रोड पर कमल तलाई के पास बाइक सवार तीन नाबालिग किशोरों ने मिलकर एक युवक के पेट को चाकू से चीर डाला, जिससे उसके पेट से आंते बाहर निकल आई। बाद में उसे गंभीर हालत में आरके जिला अस्पताल ले गए, जहां उदयपुर रेफर कर दिया गया। अब तक चाकू घोंपने की कई वारदातें हुई, मगर चाकू से पेट काटने का यह पहला मामला था, जिससे राजसमंद शहर ही नहीं, बल्कि जिलेभर में सनसनी फैला दी।

कथित तौर पर युवती से छेड़छोड़ के आरोप में तीन किशोरों ने मिलकर देवली निवासी उदयलाल (20) पुत्र सोहनलाल गमेती के पेट को चाकू से काट डाला। हालांकि बाद में हमलावर तीनों ही किशोरों को पुलिस ने निरुद्ध कर लिया।

शिक्षक ने डंडे व लातों से छात्रा को बेरहमी से पीटा

राजसमंद. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवगढ़ में शिक्षक ने एक छात्रा को लात, घुसे से बेरहम पिटाई की। बाद में उसे गंभीर हालत में अस्पताल ले गए, जहां उपचार कराया गया। इधर, शिक्षा विभाग ने भी आरोपित शिक्षक के खिलाफ जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार विद्यालय के शिक्षक कमलाशंकर पानेरी ने पहले छात्रा को कक्षा से बाहर निकाला। फिर डंडे पीटा और बाद में लातों से बेरहम पिटाई कर दी। बाद में विद्यालय के अन्य शिक्षक उसे अस्पताल ले गए और उपचार के बाद उसे घर भेज दिया गया। पीड़ित छात्रा के पिता ने शिक्षक के खिलाफ देवगढ़ थाने में रिपोर्टदी। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी। उल्लेखनीय है कि शिक्षक पानेरी आदतन है, जिनके द्वारा पहले भी कुछ छात्रों के साथ भी इसी तरह की मारपीट की बात सामने आई है।

बेटी-भतीजी के बयान से पिता व चाचा को उम्रकैद

अपर जिला एवं सेशन न्यायालय का फैसला

राजसमंद. अपर जिला एवं सेशन न्यायालय ने वर्ष 2010 के चर्चित पत्नी-सास सहित छह लोगों की हत्या के मामले में बेटी के बयान पिता व चाचा को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। 20 मार्च 2010 को आरोपितों ने चरित्र पर शक के आधार पर चाकू से पत्नी, सास, दो साला, दो सालियों की निर्मम हत्या कर डाली। इस पर हत्या के आरोपित राधेश्याम जोशी व हरीश को गिरफ्तार कर लिया, जो जिला जेल में बंद थे। प्रकरण की सुनवाई न्यायालय में विचाराधीन थी। प्रकरण में राधेश्याम की बेटी व हरीश की भतीजी मुख्य गवाह बनी और उसी आधार पर उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

भाषण के लिए बाद आमंत्रित किया तो नाराज हुए नेताजी

देवगढ़. राघवसागर के समीप स्थित रावत नाहरसिंह राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के लोकार्पण समारोह में कथित तौर पर जनप्रतिनिधियों से पहले जिला शिक्षा अधिकारी का उद्बोधन दिलवाने से भाजपा कई नेता नाराज हो गए और कार्यक्रम छोड़ कर चलते बने। पहले जिला शिक्षा अधिकारी भरत कुमार जोशी को उद्बोधन के लिए बुलाने पर जिला प्रमुख प्रवेश कुमार सालवी के अलावा कई नेता नाराज हो गए।

बाद में आयोजकों ने हालात संभालते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष को उद्बोधन के लिए आमंत्रित भी किया, मगर सालवी की नाराजगी के चलते भाजपा जिलाध्यक्ष भंवरलाल शर्मा, प्रधान उम्मेदसिंह चुंडावत सहित कई भाजपाई उठकर चलते बने। बाद में आयोजक उन्हें मनाने के लिए पीछे पीछे दौड़े भी, मगर वे नहीं माने।

फिर देवास से राजसमंद पानी लाने की घोषणा

राजसमंद. इस बार वसुंधरा सरकार ने राजसमंद को फिर देवास से पानी लाने की घोषणा कर दी, जबकि इसी वसुंधरा सरकार ने दो वर्ष पहले इस योजना को अप्रसांगिक बता कर रद्द कर दी थी। इस कारण सरकार की मंशा पर सवाल खड़े होने लगे हैं और आमजन में आक्रोश है। देवास से पानी लाने के लिए 2300 करोड़ की योजना बनाई थी और प्रारंभिक सर्वे के लिए भी चार करोड़ रुपए मंजूर कर दिए। बाद में सरकार ने यह कहकर फाइल को बंद कर दिया था कि राजसमंद झील को प्रतिवर्ष 800 से एक हजार एमसीएफटी जल परावर्तन किया जाना है, लेकिन देवास परियोजना से तकनीकी स्तर पर इतना पानी लाना नामुमकिन है।

चाकूबाजी से राजसमंद में तनाव के हालात

राजसमंद. शहर के जलचक्की के पास भीलमगरी में 4 फरवरी की रात को रंजिश के चलते कुछ किशोरों ने एक युवक ने घर में घुस कर युवक सहित तीन लोगों पर चाकू से हमला कर दिया।

बाद में उन्हें गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया। इसके बाद हमलावरों के घर पर कॉलोनी के लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। इसके बाद पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी पहुंच गए। दूसरे दिन कॉलोनी के लोगों ने कुछ संगठनों की मदद से राजसमंद शहर में रैली निकाली और पुलिस व प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। पिछली बार लिखित ज्ञापन के बावजूद समाधान नहीं होने पर भी आक्रोश जताया। फिर कलक्टर पीसी बेरवाल व पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार से मुलाकात की। हालांकि बाद में पुलिस ने हमलावरों को गिरफ्तार कर लिया।

बेटा-बेटी में भेदभाव रखना सामाजिक कुरीति

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. संगीता बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय केलवा में महिला दिवस पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में विद्यालय अध्यक्ष संगीता देव ने छात्र छात्राओं को महिला सशक्तिकरण के बारे में जानकारी देते हुए परिवार, समाज में बेटा व बेटी में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करने का आह्वान किया। समाज में कुछ लोग अब भी भेदभाव रखते हैं, जो सामाजिक बुराई है। राजपालसिंह की प्रेरणा से आयोजित कार्यक्रम में प्रधानाचार्य महेंद्र आचार्य सहित शिक्षक शिक्षिओं ने बेटी पढ़ाई और बेटी बचाओ का संकल्प लिया। इस दौरान उप प्रधानाचार्य मुकेश सरगरा ने अतिथियों का स्वागत एवं आभार जताया।

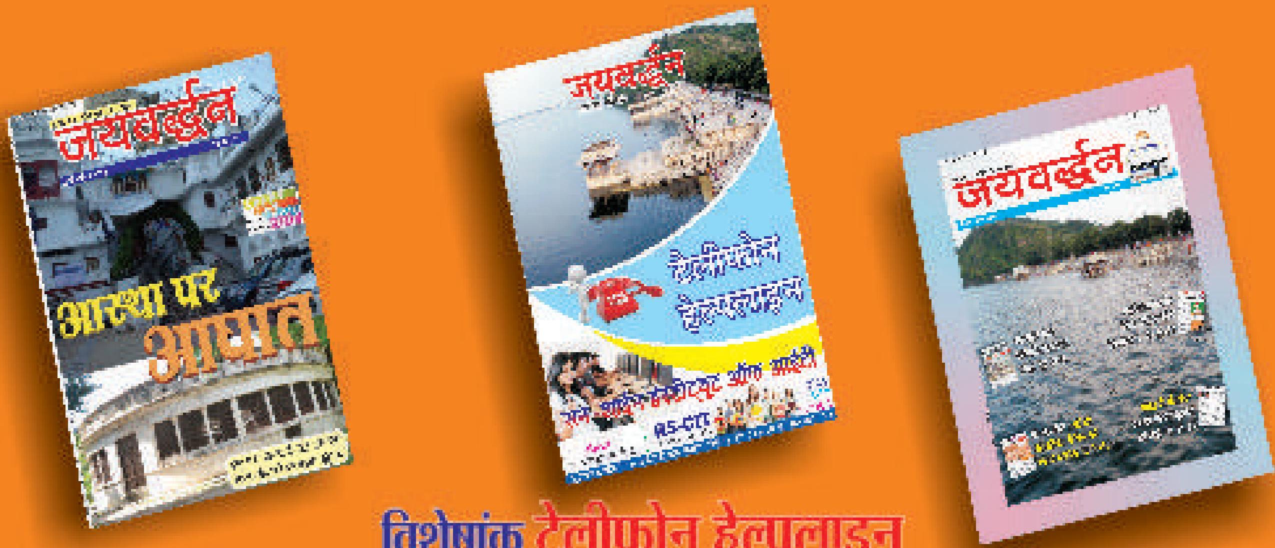

विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन

मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

फोरलेन के फेरे

लघु कहानी

गांव का गरीब गोमा गमेती
ठेठ अनपढ़ और
सीधा सादा बेचारा।
तीन महीनो से बार बार
फेरे लगा रहा था
गांव और शहर को बीच
उस सुनसान चौड़ी सडक पर।।
चिलचिलाती धूप
जेठ की गरम हवाऑं
के थपेडों से दुसवार दोपहरए
ना कहीं पेड़ों की छाँव
ना कोई भी गाँवए
बस चलते जाना है
सफ़र पर बिना रुके।।
अगर, नजर आ जाता
कहीं राह में
शीतल पानी का बहता
निर्झर जल स्त्रोत,
या ताल तलाई कोई
तो पी लेता वो, निर्मल ठंडा नीर
बुझाने कंठ की प्यास
के साथ पेट की भूख।
और सार्थक कर देता
वो कहावत 'एक पंथ दो काज'
एक तरफ उसकी
फटे हाल जिन्दगी तो दुसरी तरफ
सुखद अनुभूति की
परछाई के रूप में
जेब में था उसका वो 'चेक'
जो मिला था उसे
फोरलेन के बीच
में आने वाली उसकी
खेतिहर जमीन के
मुआवजे के रूप में।
पर हल्का पटवारी की
खाते की नकल में उसका
नाम 'गोमजी गमेती'
और बैंक के खाते में
'आधार कार्ड' के अनुसार
नाम था 'गोमा गमेती'।।
चेक के नाम दुरस्तीकरण
में तीन महीने की दौड धूप
के बाद मुश्किल से मिले
इस सुखद पल की धुन ही धुन में वो
बेटी की शादी के सपने भी
संजो रहा था तो
अपंग बेटे के भविष्य परिवेश के
बारे मे भी सुरक्षित होता
अपनी रफ्तार से तेज
उस साईकल पर चलता जा रहा था
जो करीब करीब अस्तित्व खोने की
कगार पर थी, पर
फिर भी साथ दे रही थी
शायद उसे भी ज्ञान था कि
नाम दुरुस्तीकरण में
लगे समय के कारण चेक की
तारीख के 'आखिरी'
दिन के डर से
कहीं बैंक बन्द ना हो जाए।।
गोमजी, पैसे मिलने की खुशी
के अहसास मात्र से ही
इतना उल्लासित हो गया
कि कब वो सडक के बीच
चला गया और पीछे से कोई
ट्रक तेज गति से आती उसे
टक्कर मारती निकल गई
और जब उसे होश आया तो
था वो एक, सरकारी अस्पताल के
बैड पर, तीन दिन से बेहोश
पड़ा टूटी टांग के कारण
कराहता हुआ, दर्द से तडपते तडपते
बुरा हाल हो रहा था।।
डाक्टर के बारे में तो पता चला कि
सभी 'डाक्टर' साहेब हड़ताल पर हैं
अपनी बहुसुत्रीय मांगे मनवाने
के खातिर।।
घर वाले जैसे तैसे प्राइवेट डाक्टर के
पास ले गये जहाँ
बीमार की भर्ती के पहले
पैसे जमा कराने पडते हैं।।
इलाज के लिये पैसे जमा कराने की
बारी आई और पत्नि बैंक में चेक लेकर
जमा करवाने पहुंची
तो बताया गया कि
चेक तो तीन दिन पूर्व ही
टाईम बार हो चूका था।।
तारीख पुनः दुरुस्त करानी पड़ेगी।।
तारीख दुरस्ती के लिये फिर चक्कर
काटने पडेंगे, पर
चक्कर काटने वाला अब गरीब गोमा
के घर मे कौन?
क्या? खेत के खाते मे नाम इन्द्राज
करने वाला अधिकारी
या आधार कार्ड बनाने
वाला बाबू या
तरक्की और विकास केनाम की
वो व्यवस्थाएं, जो खुद की
अव्यवस्थित कमी अथवा
गलतियों के कारण 'गोमा गमेती'
उर्फ 'गोमजी गमेती'
जैसे कई अनपढ़ गरीब लोगों को
परेशानी मे पहुंचा रही हैं।

प्रमोद सनाढ्य 'प्रमोद'
राजसमन्द

चाहिए नकल में अक्ल

वही रूप वही आकार लिए
लो अब तो तुम बहुत ही सुन्दर
लगते हो,
और वही नाम है तुम्हारा, जिससे
तुम्हें पहचाना जाता है!
पर थोड़ा सा चुक गए तुम,
क्यूंकि नकल में भी अक्ल की
जरूरत पड़ती हैं,
ये जो भंवरा दूर गुलिस्तां में
उड़ चला है, ये भी तुम्हारी
असलियत को पहचान गया,
शायद! मेरी तरह
और तुम केवल नाम, रंग,
रूप में ही डूबे रहे,
और जिस तरह भी बने
तुम बने रहे,
असलियत दूर से ही नज़र
आ जाती है...
कि तुम्हें प्रकृति ने नहीं,
इंसानों ने रंगा है,
केवल देखने के लिए,
खुशबू लेने के लिए नहीं,
खुशबू आएगी कहां से तुम में,
तुम तो केवल एक कागज़
के सुन्दर फूल हो।

नरेंद्र सनाढ्य 'चंचल', कांकरोली
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

तेरा इंतजार करते-करते

तेरा इंतजार करते करते
मैं अपनी निगाहें घड़ी पर टिकाए बैठा था
उसकी नजर और मेरी नजर एक दूसरे पर टिकी हुई थी
शायद वह मुझे कह रही थी
कि मुझे तुम अगर प्यार करोगे तो यकीनन मैं
वह सब कुछ दूंगी
जो तुमने कभी सोचान था
उसकी टिक टिक मुझे ऐसा एहसास करा रही थी
जैसे वह सिर्फ मेरे लिए धड़क रही हो
लेकिन मैंने उसकी बात नहीं मानी
मैं अपनी राह पर चलता रहा
आज मैं उस समय को महसूस करके
अपने आप को कोसता हुआ नजर आता हूं
कि काश मैं उसकी मोहब्बत अपना लेता
लेकिन... लेकिन... लेकिन
वह निकल गया...

राहुल दीक्षित
साहित्यकार, कांकरोली

सुख का मंत्र, कल की चिंता छोड़ो

टालस्टाय ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। मृत्यु के देवता ने अपने एक दूत को भेजा पृथ्वी पर। एक स्त्री मर गई थी। उसकी आत्मा को लाना था। देवदूत आया, लेकिन चिंता में पड़ गया। क्योंकि तीन छोटी छोटी लड़कियां जुड़वां अभी भी उस मृत स्त्री से लगी है। एक चीख रही है, पुकार रही है। एक रोते रोते सो गई है। उसके आंसू उसकी आंखों के पास सूख गए हैं। तीन छोटी जुड़वां बच्चियां और स्त्री मर गई है और कोई देखने वाला नहीं है। पति पहले मर चुका है। परिवार में और कोई भी नहीं है। इन तीन छोटी बच्चियों का क्या होगा।

उस देवदूत को यह खयाल आ गया, तो वह खाली हाथ वापस लौट गया। उसने जाकर अपने प्रधान को कहा कि मैं न ला सका। मुझे क्षमा करें, लेकिन आपको स्थिति का पता ही नहीं है। तीन जुड़वां बच्चियां हैं। छोटी छोटी, दूध पीती। एक अभी भी मृत से लगी है। एक रोते रोते सो गई है। दूसरी अभी चीख पुकार रही है। हृदय मेरा ला न सका। क्या यह नहीं हो सकता कि इस स्त्री को कुछ दिन और जीवन के दे दिए जाएं। कम से कम लड़कियां थोड़ी बड़ी हो जाएं और कोई देखने वाला नहीं है।

मृत्यु के देवता ने कहा, तो तू फिर समझदार हो गया। उससे ज्यादा, जिसकी मर्जी से मौत होती है, जिसकी मर्जी से जीवन होता है। तो तूने पहला पाप कर दिया और इसकी तुझे सजा मिलेगी और सजा यह है कि तुझे पृथ्वी पर चले जाना पड़ेगा। जब तक तू तीन बार न हंस लेगा अपनी मूर्खता पर, तब तक वापस न आ सकेगा।

इसे थोड़ा समझना। तीन बार न हंस लेगा अपनी मूर्खता पर। क्योंकि दूसरे की मूर्खता पर तो अहंकार हंसता है। जब तुम अपनी मूर्खता पर हंसते हो तब अहंकार टूटता है। देवदूत को लगा नहीं। वह राजी हो गया दंड भोगने को, लेकिन फिर भी उसे लगा कि सही तो मैं ही हूं और हंसने का मौका कैसे आएगा।

उसे रूस की जमीन पर फेंक दिया गया। एक चमार, सर्दियों के दिन करीब आ रहे थे और बच्चों के लिए कोट और कंबल खरीदने शहर गया था। कुछ रुपए इकट्ठे करके। जब वह शहर जा रहा था तो उसने राह के किनारे एक नंगे आदमी को पड़े हुए ठिठुरते हुए देखा। यह नंगा आदमी वही देवदूत है, जो पृथ्वी पर फेंक दिया गया था।

उस चमार को दया आ गई और बजाय अपने बच्चों के लिए कपड़े खरीदने के, उसने इस आदमी के लिए कंबल और कपड़े खरीद लिए। इस आदमी को कुछ खाने पीने को भी न था, घर भी न था, छप्पर भी न था, जहां रुक सके। तो चमार ने कहा कि अब तुम मेरे साथ ही आ जाओ। लेकिन अगर मेरी पत्नी नाराज हो। जो कि वह निश्चित होगी। क्योंकि बच्चों के लिए कपड़े खरीदने लाया था। वह पैसे तो खर्च हो गए। वह अगर नाराज हो, चिल्लाए, तो तुम परेशान मत होना। थोड़े दिन में सब ठीक हो जाएगा।

उस देवदूत को लेकर चमार घर लौटा। न तो चमार को पता है कि देवदूत घर में आ रहा है, न पत्नी को पता है। जैसे ही देवदूत को लेकर चमार घर में पहुंचा। पत्नी एकदम पागल हो गयी। बहुत नाराज हुई, बहुत चीखी चिल्लायी और देवदूत पहली दफा हंसा। चमार ने उससे कहा, हंसते हो, बात क्या है। उसने कहा, मैं जब तीन बार हंस लूंगा तब बता दूंगा।

देवदूत हंसा पहली बार, क्योंकि उसने देखा कि इस पत्नी को पता ही नहीं है कि चमार देवदूत को घर में ले आया है, जिसके आते ही घर में हजारों खुशियां आ जाएंगी। लेकिन आदमी देख ही कितनी दूर तक सकता है। पत्नी तो इतना ही देख पा रही है कि एक कंबल और बच्चों के पकड़े नहीं बचे। जो खो गया है वह देख पा रही है, जो मिला है उसका उसे अंदाज ही नहीं है। मुफ्त! घर में देवदूत आ गया है। जिसके आते ही कई खुशियां आ गई। जल्दी ही, क्योंकि वह देवदूत था। सात दिन में ही उसने चमार का सब काम सीख लिया और उसके जूते इतने प्रसिद्ध हो गए कि चमार महीनों के भीतर धनी होने लगा। आधा साल होते होते तो उसकी ख्याति सारे लोक में पहुंच गई कि उस जैसा जूते बनाने वाला कोई भी नहीं। क्योंकि वह जूते देवदूत बनाता था। सम्राटों के जूते वहां बनने लगे। धन अपरम्पार बरसने लगा।

एक दिन सम्राट का आदमी आया और उसने कहा कि यह चमड़ा बहुत कीमती है। आसानी से मिलता नहीं, कोई भूल चूक नहीं करना। जूते ठीक इस तरह के बनने हैं और ध्यान रखना जूते बनाने हैं, स्लीपर नहीं। क्योंकि रूस में जब कोई आदमी मर जाता है, तब उसको स्लीपर पहनाकर मरघट तक ले जाते हैं। चमार ने भी देवदूत को कहा कि स्लीपर मत बना देना। जूते बनाने हैं, स्पष्ट आज्ञा है और चमड़ा इतना ही है। अगर गड़बड़ हो गई तो हम मुसीबत में फंसेंगे। लेकिन फिर भी देवदूत ने स्लीपर ही बनाए। स्लीपर देखक कर चमार क्रोध से आग बबूला हो गया। वह लकड़ी उठा कर उसको मारने को तैयार हो गया कि तू हमारी फांसी लगवा देगा और तुझे बार बार कहा था कि स्लीपर बनाने ही नहीं हैं। फिर स्लीपर किसलिए, देवदूत फिर खिलखिला कर हंसा।

तभी आदमी सम्राट के घर से भागा हुआ आया। उसने कहा, जूते मत बनाना, स्लीपर बनाना। क्योंकि सम्राट की मृत्यु हो गई है। भविष्य अज्ञात है। सिवाय उसके और किसी को ज्ञात नहीं और आदमी तो अतीत के आधार पर निर्णय लेता है। सम्राट जिंदा था तो जूते चाहिए थे, मर गया तो स्लीपर पर चाहिए। तब वह चमार उसके पैर पकड़ कर माफी मांगने लगा कि मुझे माफकर दे, मैंने तुझे मारा।

पर उसने कहा, कोई हर्ज नहीं। मैं अपना दंड भोग रहा हूं। लेकिन वह हंसा आज दुबारा। चमार ने फिर पूछा कि हंसी का कारण, उसने कहा कि जब मैं तीन बार हंस लूं।

दुबारा हंसा इसलिए कि भविष्य हमें ज्ञात नहीं है। इसलिए हम आकांक्षाएं करते हैं जो कि व्यर्थ हैं। हम अभीप्साएं करते हैं जो कभी पूरी न होंगी। हम मांगते हैं जो कभी नहीं घटेगा। क्योंकि कुछ और ही घटना तय है। हमसे बिना पूछे हमारी नियति घूम रही है और हम व्यर्थ ही बीच में शोरगुल मचाते हैं। चाहिए स्लीपर और हम जूते बनवाते हैं। मरने का वक्त करीब आ रहा है और जिंदगी का हम आयोजन करते हैं। तो देवदूत को लगा कि वे बच्चियां! मुझे क्या पता, भविष्य उनका क्या होने वाला है मैं नाहक बीच में आया और तीसरी घटना घटी कि एक दिन तीन लड़कियां आयीं जवान। उन तीनों की शादी हो रही थी और उन तीनों ने जूतों के आर्डर दिए कि उनके लिए जूते बनाए जाएं। एक बूढ़ी महिला उनके साथ आयी थी जो बड़ी धनी थी। देवदूत पहचान गया, ये वे ही तीन लड़कियां हैं, जिनको वह मृत मां के पास छोड़ गया था और जिनकी वजह से वह दंड भोग रहा है। वे सब स्वस्थ हैं, सुंदर हैं। उसने पूछा कि क्या हुआ। यह बूढ़ी औरत कौन है ? उस बूढ़ी औरत ने कहा कि ये मेरी पड़ोसन की लड़कियां हैं। गरीब औरत थी, उसके शरीर में दूध भी न था। उसके पास पैसे लत्ते भी नहीं थे और तीन बच्चे जुड़वां। वह इन्हीं को दूध पिलाते पिलाते मर गई, लेकिन मुझे दया आ गयी। मेरे कोई बच्चे नहीं हैं और मैंने इन तीनों बच्चियों को पाल लिया।

अगर मां जिंदा रहती तो ये तीनों बच्चियां गरीबी, भूख और दीनता और दरिद्रता में बड़ी होतीं। मां मर गई। इसलिए ये बच्चियां तीनों बहुत बड़े धन वैभव में, संपदा में पलीं और अब उस बूढ़ी की सारी संपदा की ये ही तीन मालिक हैं तथा इनका सम्राट के परिवार में विवाह हो रहा है।

देवदूत तीसरी बार हंसा और चमार को उसने कहा कि ये तीन कारण हैं। भूल मेरी थी। नियति बड़ी है। हम उतना ही देख पाते हैं, जितना देख पाते हैं। जो नहीं देख पाते, बहुत विस्तार है उसका और हम जो देख पाते हैं उससे हम कोई अंदाज नहीं लगा सकते, जो होने वाला है, जो होगा। मैं अपनी मूर्खता पर तीन बार हंस लिया हूं। अब मेरा दंड पूरा हो गया और अब मैं जाता हूं।

तुम अगर अपने को बीच में लाना बंद कर दो, तो तुम्हें मार्गों का मार्ग मिल गया। फिर असंख्य मार्गों की चिंता न करनी पड़ेगी।

छोड़ दो उस पर। वह जो करवा रहा है, जो उसने अब तक करवाया है, उसके लिए धन्यवाद। जो अभी करवा रहा है। उसके लिए धन्यवाद। जो वह कल करवाएगा, उसके लिए धन्यवाद। तुम बिना लिखा चेक धन्यवाद का उसे दे दो। वह जो भी हो, तुम्हारे धन्यवाद में कोई फर्क न पड़ेगा। अच्छा लगे, बुरा लगे, लोग भला कहें, बुरा कहें, लोगों को दिखाई पड़े दुर्भाग्य या सौभाग्य, यह सब चिंता तुम मत करना।

मासिक राशिफल मार्च 2018

मेष राशि : आर्थिक प्रयासों में तेजी आएगी। संतान पक्ष के कार्यों में सहयोग देना होगा। विद्यार्थी वर्ग अनुकूल स्थिति पाएंगे। प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि होगी। रुके कार्य स्वप्रयत्नों से पूरे होंगे।

वृषभ राशि : मानसिक प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा। उत्साहजनक समाचार मिलेगा। व्यापार, व्यवसाय की स्थिति ठीक हेगी। नौकरीपेशा भी अनुकूल स्थिति पाएंगे। संतान पक्ष से प्रसन्नता रहेगी। पारिवारिक कार्य बनेंगे।

मिथुन राशि : भाग्यबल द्वारा आपके कार्य बनेंगे। व्यापार, व्यवसाय की स्थिति अनुकूल रहेगी। नौकरीपेशा अनुकूल स्थिति पाएंगे। संतान के कार्यों में खर्च होगा। परिवार में शुभ कार्य होने से प्रसन्नता रहेगी। जमीन, जायदाद संबंधित कार्य बनेंगे। यात्रा के योग बनेंगे।

कर्क राशि : अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलने से कार्य कुशलतापूर्वक बनेंगे। धन.कुटुम्ब के मामलों में सहयोग के साथ उत्तम स्थिति रहेगी। आर्थिक मामलों में स्वप्रयत्नों द्वारा लाभान्वित होंगे। सोचे कार्यों में थोड़ी बाधा रहेगी लेकिन सफलता भी मिलेगी।

सिंह राशि : प्रभाव में वृद्धि होगीए वहीं स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य संबंधित मामलों में सावधानी रखना होगी। व्यापार, व्यवसाय में संतोषजनक स्थिति रहेगी। इस समय जमीनी कार्य से लाभार्जन कर सकते हैं। भाग्य में अनुकूल स्थिति रहेगी।

कन्या राशि : ईष्ट मित्रों व भाइयों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के कार्य में अनुकूल स्थिति रहेगी। नौकरीपेशा के लिए समय मिला-जुला रहेगा। अधिकारी वर्ग का सहयोग लेकर चलें। स्वास्थ्य अधिकतम ठीक रहेगा। पारिवारिक मामलों में खर्च होगा। लेन देन से बचना होगा।

तुला राशि : दांपत्य जीवन में मधुर वातावरण रहेगा। संतान पक्ष में वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग में अनुकूल स्थिति रहेगी। आर्थिक प्रयासों में अनुकूल सफ्लता पाएंगे। नौकरीपेशा के लिए थोड़ा समझदारी से चलना होगा। शुभ समाचार मिलेगा।

वृश्चिक राशि : इच्छित कार्य में सफ्ल होंगेए मानसिक सुख- शांति रहेगी। पारिवारिक सहयोग के साथ खर्च होगा। मातृपक्ष से प्रसन्नता रहेगी। व्यापार व्यवसाय में सुखद स्थिति पाएंगे। अधिकारी वर्ग भी सुखद स्थिति पाएंगे। संतान पक्ष के कार्य बनेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

धनु राशि : धर्म कर्म में आस्था बढ़ेगी। भाग्य भी साथ देगा, पारिवारिक समय अनुकूल रहेगा। नौकरीपेशा के लिए सहयोगवादी होकर प्रगति पाएंगे। दांपत्य जीवन में सुखद स्थिति रहेगी। पराक्रम द्वारा व्यापार.व्यवसाय में उन्नति पाएंगे।

मकर राशि : बाहरी व्यक्तियों से सावधानीपूर्वक वार्तालाप करें व यात्रा में भी सावधानी रखना होगी। स्थानीय मामलों में सफ्लता के साथ प्रसन्नता रहेगी। स्त्री पक्ष के मामलों में सावधानी रखना होगी। दैनिक व्यवसाय में सतर्कता बरतना होगी।

कुंभ राशि : भाग्य में अनुकूलता होने से कार्य में प्रगति आएगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। नौकरीपेशा अपने कार्य में प्रगति के साथ लाभान्वित होंगे। पिता का किसी कार्य में सहयोग लाभकारी रहेगा। शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहेगा। आर्थिक मामलों में संयम रखें।

मीन राशि : भाग्य में अनुकूल स्थिति होने से प्रगतिपूर्ण वातावरण रहेगा। पारिवारिक सुख.शांति रहेगी। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि पाएंगे। विद्यार्थी वर्ग अनुकूल स्थिति पाएंगे। नौकरीपेशा के लिए सहयोगवादी समय रहेगा। आर्थिक मामलों में सुधार होगा।

पंडित उमेश द्विवेदी
महामंत्री-सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान,
कसार जिला राजसमंद

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
प्रवेश प्रारम्भ
अधिकृत ज्ञान केंद्र
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
मूल निवास व जाति प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, पेन कार्ड, जमाबंदी, आधार व भामाशाह कार्ड
हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा | ICICI बैंक के पास केलवा
जिला-राजसमंद मो. 96498-13798, 9672994705
ई-मित्र व ऑनलाइन आवेदन की सम्पूर्ण सुविधा

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

एक बहुत ही सुंदर आवरण पृष्ठ ही पत्रिका के मजमून बयां करता है। पत्रिका ने जिन कॉलम और विषयों के माध्यम से राजसमन्द और यहां की सामाजिकता, स्वतन्त्रता संग्राम के सैनानियो का एवं अन्य बिन्दुओं पर जो लिखा है। वह अनुकरणीय है। साहित्यकारों का सहयोग पत्रिका की विशेषता है। पत्रिका की गुणवत्ता व स्तर बना रहे इसी कामना के साथ आपको बधाई।

प्रमोद सनाढ्य 'प्रमोद', साहित्यकार राजसमंद

जयवर्द्धन पत्रिका का फरवरी का अंक मिला। सुन्दर साज सज्जा, आकर्षक मुख पृष्ठ व शानदार पेपर क्वालिटी ने मन मोह लिया। पत्रिका नवोदित रचनाकारों के लिए संजीवनी व नवसृजन हेतु उत्प्रेरक बनेगी, ऐसा आभास तनु सोलंकी, बख्तावरसिंह व राव तुफानसिंह की रचनाओं से हो जाता है। मूर्धन्य रचनाकार अनोखा जी, पल्लव जी का आशीर्वाद प्रसाद हृदय तंत्र को जन्कृत करने जैसा है। समसामयिक परिदृश्य में परितोष पालीवाल की रचना हमें ग्रामीण परिवेश में लोगों की मनोदशा व उन्हें स्वच्छता के लिए समझाने के लिए गंभीर प्रयास करने हेतु प्रेरित करती है।

गणपतलाल टेलर
झीलवाड़ा, राजसमंद

इंटरनेट व ऑनलाइन के जमाने में जयवर्द्धन पत्रिका का प्रयास अनुकरणीय है। सोशल मीडिया से साहित्य, लेखन पर कोई खास असर नहीं पड़ा। सच और पारदर्शिता के लिहाज से ही पत्रकारिता का अस्तित्व है। क्योंकि सोशल मीडिया पर कुछ भी खबरें या जानकारी आ जाए, मगर उसे सही मानना हर किसी पाठक के लिए उतना ही कठिन है। पत्रिका में विभिन्न तरह के मुद्दों को जिस तरह से लिया गया है, वह वास्तव में लोगों के लिए काफी प्रेरणास्पद है।

भैरूसिंह सोलंकी
पोदावली, राजसमंद

युवा, प्रौढ़, महिला के साथ वरिष्ठजनों का ख्याल रखते हुए हर एक पहलू पर प्रेरक व शोधक परक आलेख दिए जा रहे हैं, जो वास्तव में आमजन के लिए कई मायने में खास है। साथ ही पूरे माह की रोचक व महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं कार्यक्रमों की खबरें भी लोगों को अपडेट बनाए रखती है। कविता, व्यंग्य बाण, कड़वा सच, मेवाड़ी चौपाल आदि स्तम्भ भी रोचक है।

जितेन्द्र लड्ढा,
कम्प्यूटर एक्सपर्ट, विनय कम्प्यूटर राजसमंद

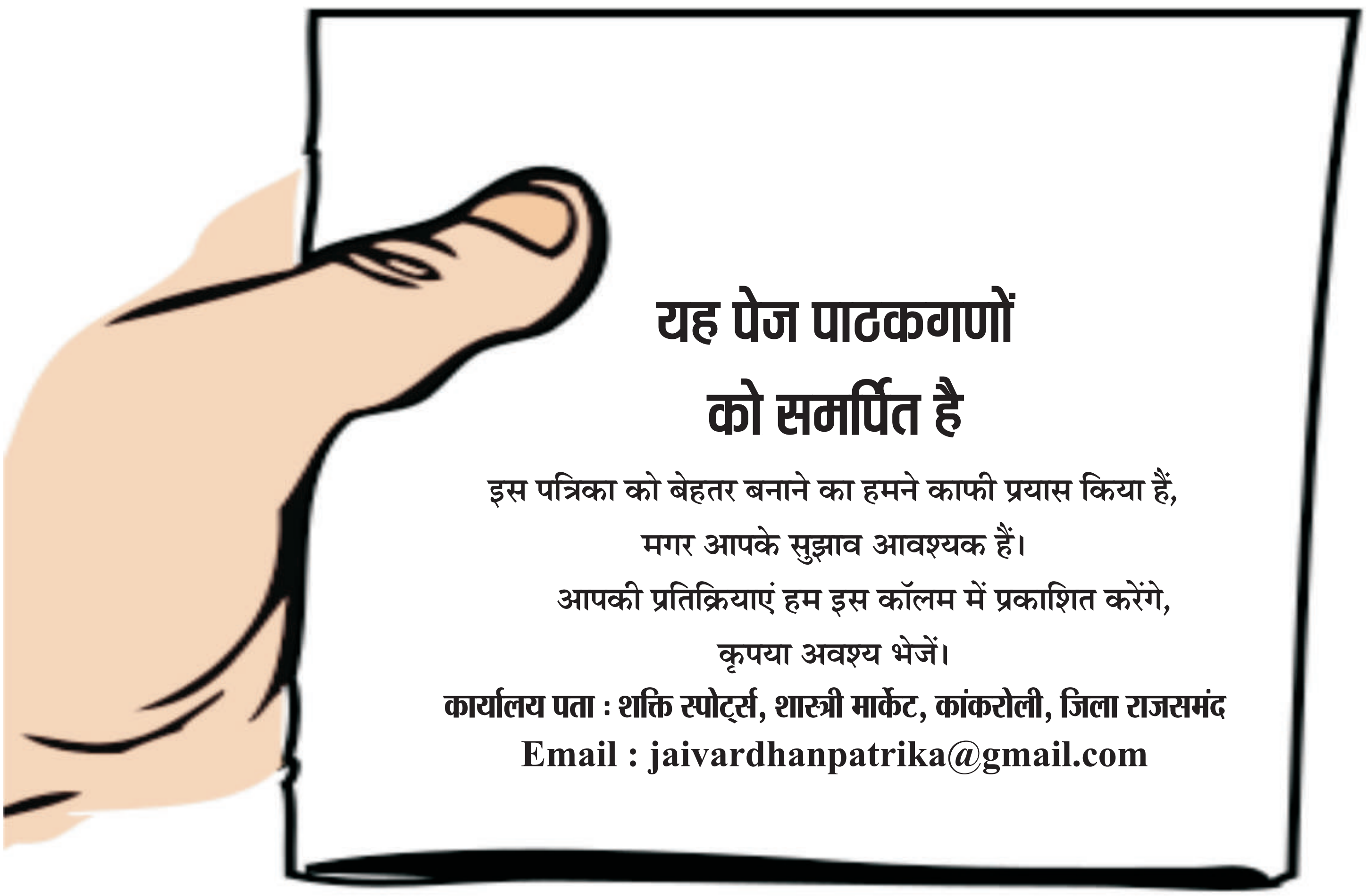

भोपां री गत भोपा जाणै

थाणा रे भड़े एक माताजी रो देवरो हो, वठै रामा बा तो भोपा ने डाळू वणां रो हजूरियौ हो, थाणादार देख्यौ के अणी देवरा में गाम- परगाम रा घणा जातरू आवे, रिप्या ने नारेळां रो ढेर वेई जावे। ओ कांई तौल ? अणी रो पतो करणो पड़े। अठऊं 'खेरो' खेरी सकां। आ वात वणी दूजा सिपाया ऊं कीदी। आगले दीतवार आपां अणी देवरे चालां ने कामळ में 'मनकी' छुपाई ने लेई जावां। भोपो समझेला के मादां टाबर ने झाड़ो नकावा लाया है। भोपा ने ठा पड़गी के अणी कामळ में मनकी है तो हांच मानै लांगा, नी तो वणी ने थांणे बुलाई ने 'खरचा पाणी' रो जुगाड़ करी नाकां ला। थाणां में एक सिपाई वणीईज गाम रो हो, वणी कियौ के माताजी रो 'परचौ' लेणो आछौ कोनी है। थाणादार बोल्यौ के थूं नी जाणै यो भोपो मनखां ने ठगे है। थां तो एक मनकी कबाड़ो जणी री वात करो।

दीतवार रौ दन आयो। थाणादार मनकी लेई ने दो सिपायां लारे देवरे पूगो। भोपा रै अर हजूरिया रै धोखो वळ्यौ के आज थाणां वाळा कई नै कई कबद करवा आया है। हजूरियौ हुंश्यार हो। वणी देख्यौ के 'उनाळा' रा दनां में कामळ रो कांई काम है ? वै नी वै अणी कामळ में कई ने कई छुपाई ने लाया है। भोपाजी ने पूछेला। भोपो माताजी रे फूल पान दीवा, बत्ती करे रीयो हो, पण मन में होच हो के पूछेला तो कांई वताऊंला ? वणी हजूरिया आड़ी देख्यौ ने दोई समझे ग्या के आज वात वगड़े। हजूरियौ आगो- पाछौ फरवा लागो वणी ने कामळ में 'मनकी' री पूछ दीखी गी। थांणादार हजूरिया ने रौबऊ पूछयौ अबे कई देर है ? जठ करो म्हारे पूछ करावणी है।

हजूरिया रै तो अबे सींगड़ा आई ग्या हां। व्हौ बोल्यौ क ओ थाणो कोनी जठे थां मनखां ने मारी कूटी ने हांच ने झूठो न झूठा ने हांचो वणाई नांको। ओ तो देवरो है, अठै तो अणी 'मातेसरी' रो होकम चाले। ढोल ढमाका वै ला, ढोल मजीरा वाजै ला। गीत भजन गावां ला, पछै माताजी पधारेला। थांरी आगत अठै कोनी चाले। हजूरियै भोपा आड़ी देख्यौ, राजी वियौ नै 'इसारो' कीदो। ढोलक मंजीरा वाज्या, हजूरियौ गावा लागो-

लाम्बी लाम्बी पूंछ भोपाजी ! काळी-धोळी रेख्यां है। मुंडा माथे मोटी मूछ्यां नाहर जस्सी आंख्या है... ।

भोपा रै वात पल्ले नी पड़ी। हजूरियौ आगे फेजू गायौ- 'नाहर-चीतरा जश्यौ मुंडो, पण गंडकड़ाऊ घबरावे है। गणपतियां रा घोड़ा चावे, दई-दूध रो भोग लगौ...'

अबे भोपा ने ठा पड़गी के कामळ में 'मनखी' है। धाकळ कीदी ने धूजवा लागो। जोर जोरऊं हांकळ पटकवा लागो। हजूरियौ हांकळ पकड़ी ने बोल्यौ- अतरो परचौ कणी ने वतावणों है अन्नदाता ? भोपे मोटी मोटी आंख्यां काढ़ी नै थाणादार आड़ी देख्यौ ने बोल्यौ- चाल। थाणादार भोपा री आ गत देखी नै घबराई ग्यौ । देवरा में वळ्यौ ने भोपे फेर धाकल कीदी। थूं म्हारौ परचौ लेवा नै मनखी लेई नै म्हारा देवरा में आयौ ? अणी घड़ी म्हारौ परचौ वताऊं थन्ने जीवतो पाछौ नी जावां दूं। थाणादार धक धक धूजवा लागो, उबारऊं भीजै ग्यौ। हजूरियौ बोल्यौ- अन्नदाता ! अणी काळा माथा रा मानवी ने माफ करावौ ओ वेण्डो है। नै जो चावो डंड करो, पण एक दांण पाछौ जावा दो। थाणांदार टोपी भोपा रे पगां में मेली ने पगां लागो। अरज कीदी के अन्नदाता ! वैणी ज्या गलती तो वेईगी । भोपे औजू धाकल कीदी नै कियो- थने थारी थाणांदारी ने गते नी गाली तो समझ लीजै के म्है खाली माली माथो हलायौ।

हजूरियौ बोल्यौ के एक दाण माफ करावो अन्नदाता। भोपो ढीलो पड़्यौ ने होकम कीदो थूं आगले दीतवार म्हारै जागण परौ करावजे नै गाम ने जीमाई दीजै। पछै अणी देवरा आड़ी मुंडो मती करजे नी तो रोटा बायड़ो करे नाकू लां। थाणांदार बोल्यौ- अन्नदाता रौ होकम पाछौ कोनी फेरूलां, वो पगे लागो। हाथ जोड़ी नै ऊबो रीयौ। भोपाजी रे डील में आई माताजी जाती री। हजूरियौ बोल्यौ- भोपां री गत भोपा जाणै ऐ कांई जाणे डोपा।

जवानसिंह सिसोदिया
साहित्यकार, नाथद्वारा

शक्ति स्पोर्ट्स
एक ही जगह पर
सभी तरह की
खेलकूद
सामग्री मिलने
एकमात्र स्थान

जे.के. मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली, जिला-राजसमंद
मो. 9414239648, 9414473275

सुविधा का सच

कार्यशाला का अंतिम दिन था। सभी लोग बहुत खुश थे। खुश होना भी लाजमी था। पूरे हफ़्ते के बीत जाने के बाद घर लौटने का समय आ गया था। सभी लोग बतिया रहे थे। मिलन- मिलाने के वादे हो रहे थे। पूरी कार्यशाला में पुरुष अधिक और महिलाएं कम ही थी। कुल जमा पांच महिलाएं पचास की संख्या में नजर आती रही।

सभी दो-दो, तीन-तीन के झुंड में मिलकर बातें कर रहे थे। कार्यशालाओं में बातें अधिकतर गंभीर ही होती हैं, परंतु चाय पान के समय जो भी चर्चाएं होती है। वे अक्सर मंच पर आकर सम्बोधन देने वाले के हाव भाव, अल्पाहार व चाय की गुणवत्ता पर या अपने अपने उस्तादों के गुण दोष पर ही केन्द्रित होती है। इस कार्यशाला में भी वह सब कुछ दिखाई दे रहा था।

मैं भी सभी सार्थक और निरर्थक चर्चाओं का सहभागी था। तभी सुविधा पास आई और कहा- सर, क्या आपकी गाड़ी में लौटते समय मुझे भी साथ लेंगे ? मेरे हाथ में चोट है। आपके साथ हो जाऊंगी, तो इस कड़ी गर्मी में कम से कम धक्के नहीं खाने पड़ेंगे।

मैंने सुविधा को मुस्कराकर कहा- अवश्य सुविधा जी, लेकिन गाड़ी मेरे मित्र विशाल की है। बस उन्हें कह देते हैं। विशाल पास ही खड़े थे। विशाल मेरे साथी अधिकारी रहे। एक ही शहर से कार्यशाला में साथ- साथ आने से उनकी कार से आना- जाना तय हुआ था।

जब साधन के स्वामी ही कोई और हैं, तब सीधे सीधे कैसे हामी भरी जा सकती है ? अनुशासन मानना ही था। सुविधा ने विशाल से अपनी गाड़ी में साथ लेने का अनुरोध किया। विशाल ने अपना फरमान सुनाया। यह तो ठीक है, लेकिन मेडम, हम आपको हाइवे पर छोड़ सकते हैं। आपके घर तक नहीं चल सकते। ऐसा चलेगा क्या ?

सुविधा ने सरलता से स्वीकार करते हुए कहा- सर, हाइवे पर चलेगा। वहां पर मैं किसी को बुला लूंगी। विशाल ने इसके बाद सुविधा का एक संक्षिप्त सा इंटरव्यू ही ले लिया। इसी इंटरव्यू में सुविधा ने बताया कि वह घर में सबसे बड़ी है। पारिवारिक समस्याओं की वजह से विवाह नहीं किया। छह बहने हैं। भाई नहीं है। माता पिता रहे नहीं। साथ में सबसे छोटी बहन रहती है। बड़ी बहन का पुत्र, जिसे उनके पिता ने गोद लिया था वह भी सपरिवार साथ ही रहता है। उम्र चालीस के पार हो गई। अब विवाह करने की इच्छा भी नहीं रही।

इन सभी बातों को सुनकर विशाल ने हैरानी के साथ सुविधा को देखा। सुविधा ने इस पर पूछा- अरे आप इतनी हैरानी से मुझे क्यों देख रहे हैं ? अविवाहिता हूँ, इसलिए ?

विशाल को उत्तर देते नहीं बना। उनकी चोरी पकड़ी गई थी। अपना बचाव कर लेना ही उचित समझा। बचाव की मुद्रा धारण करते हुए कहा- नहीं नहीं ऐसा कुछ नहीं, बस यों ही। इसी के साथ विशाल ने सुविधा को भी साथ लेने की स्वीकृति दे दी। तय हो गया कि हम सुविधा को घर तक छोड़ने नहीं जाएंगे, उन्हें।

उनके शहर के बाहर हाइवे पर जहाँ वे कहेंगी छोड़ देंगे। उन्हें लेने वाले जो भी आएंगे वे पूर्वनिश्चित जगह मिल जाएंगे। वह आने वाले के साथ जाएगी और उसके बाद हम अपने शहर की तरफ बढ़ जाएंगे।

सुविधा धन्यवाद देकर पुनः अपने झुंड की ओर बढ़ गई। हम दोनों चाय लेकर एक कोने में खड़े हो गए। अब विशाल का अनुशासन शुरू हुआ। वे मुझ से बोले. श्देखिए भाई साहबए यह तो आपने कह दिया इसलिए गाड़ी में महिला को बिठा रहा हूँ। बाकी अपना सिद्धान्त है कि महिला को पास नहीं फ्टकने देताश। मैंने उनकी तरफआश्चर्य से देखा। वे पूर्व में कई बार अपनी बातों से स्त्रियों के प्रति आकर्षण व्यक्त कर चुके थे। जिससे उनके अन्य रूप का पता चल रहा था। ऐसे ही बदलाव इसके पहले भी कई बार अनुभव कर चुका था।

वे अपनी मुद्रा बदलते हुए बोले- श्वैसे भाई साहब बात में बात है। ये महिला नाम का जीव..... ।

वे कुछ आगे बोलते उसके पहले ही मैंने उनको रोकते हुए कहा दृश्विशालए उनके हाथ में चोट है। वह तीन- चार दिनों से निढाल होकर पड़ी हैं। आपने क्या रेस्ट रूम में और क्लीनिक आते-जाते उनको नहीं देखा थाश्घ् मुझे लगा कि मेरी बात से विशाल को चोट पहुंची है।

मैंने बात को संभालते हुए कहा- देखो यार, हमारे भी बहन- बेटियाँ है। वे भी तो कभी इस तरह की दिक्कतों से गुजरती होंगी। कोई न कोई भला व्यक्ति उन्हें भी मदद करता होगा। आप जैसे अच्छे और लिखने- पढ़ने वाले संवेदनशील व्यक्ति से मदद की उम्मीद कोई भी कर ही सकता है। साथ ही विशाल की प्रशंसा भी हाथ लगे कर दी। प्रशंसा वो मरहम है जो जले को ठंडक देती है। विरोधी को भी पक्ष में करने का सामर्थ्य रखती है। व्यक्ति को ऐसा विनम्र करती है कि उसमें सज्जनता की लहरें हिलोरें मारने लग जाती हैं।

अब विशाल, विनम्रता से बोले- भाई साहब, आपने सही बात कही। सामान्य और संवेदनशील व्यक्ति में यही अंतर है। सामान्य व्यक्ति अपने काम से काम रखता है। संवेदनशील व्यक्ति त्याग और सेवा के लिए ही बना है। हम तो हमेशा ही कमजोरों की मदद करने को तैयार रहे हैं। फिर सुविधा तो अपने ही विभाग की हैं। फिर औरत जो ठहरी। हम मदद ना करेंगे तो कौन करेगा? इसी के साथ उनके त्याग और सेवा से भरे हुए कई किस्से भी उनके श्री मुख से सुनने को मिल ही गए? विशाल के रूप परिवर्तन से मैं शंकित ही रहा हूँ। ना जाने वह कब करवट बदल ले। उस समय मैं मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। सुविधा जी जिस विश्वास को लिए मेरे पास चली आई, वह नहीं टूटेगा।

खैर, बात आई गई हो गई। लंच के समय हम कुछ देर से ही जाते थे। तब तक खाने की सारी मेजें खाली हो जाती हैं। लोग थोड़े से समय के लिए अपने अपने कमरों में सुस्ताने चले जाते थे। उस दिन भी हम नित्य की तरह अंत में ही पहुंचे। डायनिंग हॉल में सुविधा एक मेज पर किसी साथी से बात कर रही थी। मैने जैसे ही हॉल में प्रवेश किया वह तपाक से खड़ी होकर पास आ गई और कहा- सर, मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रही थी। कृपया, मुझे साथ लेकर ही जाइए।

मैंने उन्हें विश्वास दिलाया और कहा- आप तैयार रहें। आपको लेकर ही चलेंगे। कुछ रुककर मैंने अपनी ओर से कहा- सुविधा जी, मेरी अपनी गाड़ी होती तो मैं आपको आपके आवास पर छोड़कर ही आगे बढ़ता।

सुविधा ने हाथ को दिखाते कहा- सर, मैं समझती हूँ। बस आप मुझे हाइवे पर ही उतरवा दें। देखिए ना हाथ, बहुत तकलीफ हो रही है। इसकी साथ ही दर्द की मोटी परत उनके मुंह पर चढ़ती चली गई थी।

बातों ही बातों में पता चला। हाथ में अचानक चार दिन पूर्व सुविधा की अंगुली पर सूजन आ गई थी। मवाद पड़ गया था। इसलिए डॉक्टर ने ओपरेट कर दिया। उन्हें मधुमेह था। अंगुली ठीक होने का नाम नहीं ले रही थी। इस सब जानकारी से मेरी सहानुभूति भी सुविधा के लिए और अधिक बढ़ गई। जाते- जाते मैंने उन्हें कह दिया- आप तैयार रहें। निकलते समय आपको कॉल कर दूंगा।

व्यक्ति के सम्मुख यदि परेशानियाँ अपना परिचय दे रही हो और उस समय यदि कहीं से मदद मिल जाए तो राहत मिलती है। सुविधा मेरी बातों से आश्वस्त होकर तनाव मुक्त नजर आने लगी। वह पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ गई।

कार्यशाला के समापन के बाद हम अपने कमरे में लौट आए। मैं और विशाल एक ही कमरे में रुके हुए थे। दोनों ही अपने अपने बेग तैयार करने में लग गए। तैयारी के समय विशाल बोले- भाई साहब, हम मजे से बातें करते आए और जाते भी उसी तरह से, लेकिन अब लौटते समय वो बात नहीं रहेगी।

मैंने बेग बंद करते हुए कहा- ऐसा क्या हो गया जो हम बातें नहीं कर सकेंगे?

विशाल ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया। अचानक लापरवाह होते कहा- अरे यार भाई साहब, अब सुविधा जी नाम का प्रतिबंध जो लग जाएगा। विशाल की बात के जवाब में मैंने बस इतना ही कहा- भाई, वह परेशानी में है। बातें तब भी हो सकेगी।

विशाल ने कहा- अरे भाई साहब, उनकी परेशानी समझ रहा हूँ। बात स्वतन्त्रता की है। मैं बात को समाप्त करने के मिजाज में ही था, परंतु उनकी बात से स्वयं को रोक न सका और कह दिया- जनाब थोड़ा सा सुधार करें। बात स्वतन्त्रता की है या स्वच्छंदता की है?

जब दो व्यक्ति किसी बात पर सहमत ना हो तब उत्तेजना बढ़ सकती है। यह उत्तेजना दोनों तरफ हो सकती है या एक तरफा भी हो सकती है। मुझे उनके साथ ही गाड़ी में निकलना था। सुविधा जी को दिए गए आश्वासन को भी पूरा कराना था। अत: मैं उनकी बातें सुनकर भी शांत था। मुझे आशंका थी कहीं विशाल का दूसरा रूप प्रभावी ना हो जाए।

मेरी बात विशाल को पसंद नहीं आई थी। अब विशाल ने स्वतन्त्रता और स्वच्छंदता पर अपने तर्क परोसे। महिला अधिकारों को लेकर अपना ज्ञान उड़ेला। पुरुष स्वतन्त्रता पर अपनी निजी चेतना से परिचित कराया। अपनी तमाम खूबियों को बताया, जिनसे उनका निस्वार्थ और महामानव होना तय होता था। अपने सारगर्भित प्रवचन में यह भी कह दिया- महिलाएं कमजोर होती हैं। इसलिए उनकी मदद करना पुरुषों का धर्म होता है।

अब तक बेग तैयार हो गए थे। बेग उठाए और गाड़ी की तरफ चल दिए। चलते- चलते ही विशाल ने एक और अजीब सी हिदायत दे डाली। भाई साहब, सुविधा से ज्यादा बातें नहीं करना। यह हिदायत किसी भी आत्मसम्मान को चाहने वाले व्यक्ति को अच्छी नहीं लगती। स्वाभाविक रूप से मुझे भी बिलकुल अच्छी नहीं लगी थी।

यही वजह हमारे बीच दूरियाँ बढ़ाने वाला कारण बन रहा था। मैं सदैव ही बंधनों के खिलाफरहा हूँ, लेकिन यहाँ मैं किसी को दिए गए आश्वासन की वजह से समझौता कर रहा था। जिसे आत्मसम्मान स्वीकार नहीं कर रहा था। संस्कार विवश कर रहा था।

मैंने सुविधा को फोन कर दिया था। वह पोर्च में ही मिल गई। गाड़ी में सामान जमाया और निकल पड़े। जयपुर शहर बड़ा है। भूल- भुलैया से बाहर निकलने के लिए हमेशा की तरह ही मोबाइल मदद कर रहा था। गाड़ी विशाल ही चला रहे थे। आते समय भी उन्होंने यह भार उठाया था। मैंने उन्हें मदद के लिए पहल भी की थी, परंतु कार वही भगाते रहे थे। लौटते समय भी यही होने वाला था।

विशाल हर स्थान पर अपने को ही बेहतर दिखाने की कोशिश करते हैं । कार को ड्राइव करने में भी वे अपनी इस आदत से बाज नहीं आए। शायद वे अपनी बेहतरी से सुविधा को इस रूप में परिचित करा रहे थे। आते समय गति अवरोधकों पर कार की उछालों से और ब्रेक की चीख़ों से मैं सहम चुका था। अब लौटते समय वे निरंतर सही- गलत ओवरटेक करने में लगे हुए थे। धीरे चलाने के लिए कई बार कह चुके । लेकिन वे कभी नहीं माने। एक ही बात कह देते- मुझे मेरे हिसाब से गाड़ी चलाने दीजिए । गाड़ी बहुत सब्र से ही चलाता हूँ। आप लोग डरे नहीं।

पहले गलत ओवरटेक में हम बहुत मुश्किल से बचे। दूसरे ओवरटेक ने गाड़ी को चपेट में ले ही लिया। तीनों ही बाल- बाल बचे। भय के मारे चीख ही निकल गई थी। बाईं तरफ पीछे के दरवाजे का एक हिस्सा उधड़ गया था। दाईं ओर से कार डिवाइडर से लगी हुई थी। इस हादसे से पहले भी विशाल को रोकने की कोशिश की थी। वे रुके नहीं। वे दुर्घटना के बाद हम पर चिढ़ ही गए थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह सब हो क्या रहा है ? शायद विशाल सुविधा के साथ होने से अतिरिक्त प्रयत्नशील थे।

गाड़ी चलने की स्थिति में थी। हम आगे बढ़ गए। अब वे अतिरिक्त सावधानी से गाड़ी चलाने लगे। इस अतिरिक्त सावधानी में हमें भी शामिल किया गया। सुविधा जी पीछे बैठी थी। उन्हें साइड में बैठने के लिए कहा गया। मुझे दाईं और से गाडियाँ तो नहीं आ रही देखने का निर्देश दिया गया। जिसे हमने भी सहज रूप में स्वीकार कर लिया था। सुविधा जी पर भय छा गया था। भय के चलते वे निरंतर सामने से दौड़कर आने वाली कोलतार की सड़क को देखती चली जा रही थी। वे गुनगुना रही थी। गुनगुनाकर वह अपने भय को छिपाने का प्रयास कर रही थी।

जहां भी व्यक्तिगत निर्णय लिए जाते हैं और दूसरों को न सुना जाए तब ऊब होती है। मैं बहुत ऊब महसूस कर रहा था। क्योंकि मेरी सही बातों को भी विशाल कई बार खारिच कर चुके थे। ऊब व्यक्ति को शिथिल करती है। इसी ऊब के चलते मैं थोड़ी देर में ही सो गया था। टोल नाके पर आँख खुली। सुविधा जी ने पैसे आगे बढ़ाए। मैंने मना किया पर वो नहीं मानी। पैसे हर टोल नाके पर वहीं देती थी। हां, यहाँ एक बात बताना जरूरी है। विशाल ने एक भी बार पैसे देने के लिए सुविधा को नहीं रोका। शायद उनका अर्थशास्त्र ऐसा नहीं करने दे रहा था।

दो घंटे की यात्रा के बाद सुविधा का शहर पास आ गया था। वे मोबाइल फोन पर व्यस्त थीं। किसी को अपने बारे में बता रही थी कि वे उन्हें लेने के लिए बाइपास पर आ जाए। सुविधा ने अपनी ओर से घर चलने और चाय पान के लिए आग्रह कर दिया था। जिसे विनम्रता से अस्वीकृत कर दिया गया था। ऐसे हालात में सुविधा ने आने वाले को ही कुछ खाने पीने का लेकर आने के लिए कह दिया था।

इस परेशानी के लिए सुविधा को मना करने पर उन्होंने तर्क दिया - हमारा सफर लंबा है और इससे हमें सहायता ही मिलेगी। टोल नाके पर दिए गए पैसे से और अल्पाहार की अग्रिम व्यवस्था से विशाल खुश थे, लेकिन कार की टूट फूट से उनका दुख कभी कभी रिस जाता था। मैं उनके दुख के रिसाव को हर बार यही कहकर कम करने की कोशिश करता था। गाड़ी का बीमा है, चिंता न करो। ठीक हो जाएगी।

जिस जगह सुविधा को उतरना था। वहां गाड़ी रोकी गई। हरे भरे सघन नीम के नीचे चाय का ठेला लगा था। मुझे चाय पसंद है। विशाल चाय नहीं पीते हैं। मेरे लिए अच्छा अवसर था। मैं सीधे ही चाय वाले की तरफ बढ़कर पास पड़ी खटिया पर बैठ गया।

सुविधा फोन पर बात कर चुकी थी। कार लिए एक सज्जन उन्हें लेने आ गए थे। सुविधा ने लाई गई अल्पाहार की सामग्री हमारी गाड़ी में रखवा दी। उसके बाद वह आने वाले व्यक्ति को लेकर मेरे पास ही आ गई। अब तक विशाल भी आ चुके थे। कुर्सियों पर ये लोग बैठ गए। आपस में हल्का फुल्का परिचय हुआ। चाय साथ साथ ली। चाय पान के बाद विशाल आने वाले व्यक्ति से बातचीत करते हुए आगे- आगे हमारी गाड़ियों की ओर बढ़ रहे थे। मैं और सुविधा पीछे पीछे चल रहे थे। अकस्मात सुविधा रुकीं और आने वाले सज्जन की ओर संकेत करते हुए मुझे दृढ़ता से कहा- सर, रिश्ते में ये मेरे कुछ भी नहीं लगते हैं, लेकिन अब ये ही सब कुछ हैं। ये दिल के बहुत अच्छे हैं। मेरा और मेरे परिवार का बहुत ख्याल रखते हैं। हम स्कूल के समय से अभी तक साथ साथ हैं।

सुविधा को मुझ पर कुछ विश्वास अधिक ही हो गया था। यह मैं निरंतर अनुभव कर रहा था। मैं हल्के से मुस्करा भर दिया। सुविधा को मैं बदले में मात्र यही कहा- बहुत अच्छा, अच्छे से रहिए।

सुविधा ने अपनी बात कह दी। अब यह मेरे पर निर्भर है कि मैं उनकी बात को किन संदर्भों में लेता हूँ। इसकी शायद उनको परवाह भी नहीं थी। सुविधा की साफ़गोई, स्पष्टता और अंतर मन को समझने की क्षमता से मैं एक मजबूत स्त्री को अनुभव करने लगा। अब तक सुविधा के प्रति मेरी सहानुभूति रही थी, लेकिन अब वह सम्मान में बदल चुकी थी।

सुविधा ने विशाल की तरफएक उचटती नजर डाली और धीरे से कहा- सर, बुरा ना मानिए। आपके इन मित्र को मेडिटेशन की जरूरत है। इसी के साथ वह अभिवादन कर अपनी गाड़ी में बैठ गई। हाथ उठा कर चल पड़ी और उनके घर आने का सहज निमंत्रण भी देती गई। सुविधा की गाड़ी अलग रास्ते पर बढ़ चुकी थी और हम अपने शहर की तरफ दूसरी दिशा में। विशाल ने मेरी तरफ देखते हुए कहा- देखा भाई साहब- सुविधाजी ने हमको बोला विवाह नहीं किया। अब आप ही बताएं ये आने वाले हैं कौन इनके ? स्त्री प्रकृति से होती ही... ।

मैंने विशाल को रोकते हुआ कहा- भाई जिसको तुम कमजोर समझते हो वह इतनी कमजोर और बेवकूफ नहीं है। ये आने वाले सज्जन सुविधा के रिश्ते में कुछ नहीं है, परंतु सब कुछ हैं। यह मैं नहीं कह रहा। सुविधा ही मुझे बिना पूछे ही कह गई है। शायद उनको ज्ञान हो गया था कि आने वाले के बारे में चर्चा हो सकती है। जरा बताओं इतने बेबाक तरीके से सत्य को कहने का साहस कितने लोगों में पाते हो? विशाल के लिए यह बड़ा आघात था। आश्चर्य से उस तरफ देखने लगे, जिस तरफ सुविधा की गाड़ी बढ़ गई थी।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित,
साहित्यकार, राजसमंद

श्री द्वारकेश ट्रेडर्स

SHREE ULTRA RED-OXIDE

कमलेश पालीवाल
मो. 9413217776
8107940296

Authorised Dealer : SHREE ULTRA RED-OXIDE

गणेश चौराहा, धोइन्दा, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

रतन सर-निदेशक

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

Angel Computer Sales and Service

(We Understand your digital world)

Computer service at your Doorstep Laptop Desktop, Installation, Formatting, Upgrading, Virus Cleaning, Troubleshooting, Restarting, Hanging No Display.

Printer repair & Cartridge Refill

Also all Type of CCTV camera installation

Mukharji chouraya kankroli, Call: 7665038795

जितेन्द्र लढा
सुनिता लढा

जिले में ई-गवर्नेन्स सेवाओं हेतु राजस्थान सरकार द्वारा राज्यस्तर पर सम्मानित

विनय कम्प्यूटर्स

जिला परिषद के पास, 100 फीट रोड़, राजसमन्द

Mo. 9414677357
7737574175

Software/Web Development, Trademark, ISO, Digital Sign, GST/Firm registration, RIICO/Mining applications, Bulk massaging, FASTAG registration, Money transfer, Online payments, Bill payments, Recharges, Bus/Flight Ticket, Laptop/Desktop available.

CSC कॉमन सर्विस सेन्टर
e-GOVERNANCE SERVICES INDIA LIMITED
e-mitra

जिले में अधिकृत एकमात्र एक्सक्लुजिव डिस्ट्रीब्युटर
vodafone m-pesa

ग्राहक सेवा केन्द्र
SBI

जिला कार्यालय
आचार्य
TECHNOLOGIES
राजस्थान सरकार द्वारा चयनित LSP

राजसमन्द जिले में कहीं भी ई-मित्र/बैंक बीसी/ RS-CIT सेन्टर लेने, m-pesa एजेन्ट बनने हेतु सम्पर्क करें।

विशेष ध्यान दे - कोई भी बिल जमा करवाने पर अथवा खाते में नकद जमा करवाने या निकासी पर तुरन्त कम्प्युटर प्रिन्टेड रसीद अवश्य प्राप्त करें।

अपनाये ! समय व ईधन दोनों बचाये,
साथ ही टोल में भी कैशबैक पायें!

अब बिना बैंक खाता-पाये एटीएम कार्ड तुरन्त
अपनाये केशलैस और हो जाये डिजीटल

- किसी भी खाते में रुपये ट्रांसफर करें।
- सभी प्रकार के रिचार्ज स्वयं करें।
- इस एटीएम कार्ड से कभी भी, कहीं भी भुगतान करें।
- सभी प्रकार के ऑनलाईन भुगतान करें। ▶ टोल/पेट्रोल पम्प पर भुगतान करें।
- किसी भी दुकान पर भुगतान करें। ▶ रेल, बस, विमान, सिनेमा आदि के टिकिट बुक करें।
- मात्र 2 सेकण्ड में, बहुत ही आसानी से साथ ही पाये, आकर्षक ऑफर्स हर भुगतान पर।

सप्तम् पुण्यतिथि

कर्म धर्म सहिष्णुता की प्रेरणा भुला नहीं पायेंगे,
आपके अलौकिक पथ पर हम चलते ही जायेंगे।

हमारे पूजनीय

स्व. श्रीमान् घासीरामजी बोहरा

नि. राज्यावास की आज सप्तम् पुण्यतिथि पर हम
अश्रुपूरित श्रद्धासुमन अर्पित करते है।

श्रद्धावनत : डायाबाई [धर्मपत्नी]
एवं समस्त बोहरा परिवार राज्यावास-कांकरोली

फर्म : ● शक्ति जनरल स्टोर ● वंदना स्टोर ● शक्ति उद्योग
● शक्ति एजेन्सीज ● शक्ति स्पोर्ट्स ● बोहरा ब्रदर्स ● अंकुर डेन्टल क्लिनिक
कांकरोली-राजसमंद फोन 231810 मो. 9460700467

क्या आपने कभी सोचा हैं?

आपके पेम्पलेट को कितने लोग पढ़ते हैं?

कितने सड़क पर बिखरे रहते हैं?

पेम्पलेट

छपवाने की अब जरूरत नहीं।

क्योंकि पेम्पलेट के खर्च में ही

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका

में अपने प्रतिष्ठान का

आप विज्ञापन लगा सकते हैं

सम्पर्क - शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली मो.9414239648,9414473275

जयवर्द्धन

राजसमंद की एकमात्र
लोकप्रिय मासिक पत्रिका

To श्रीमान्